ओ३म्

वैदिक-दैनन्दिनी

डायरी

१९७५

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

॥ ओ३म् ॥

वैदिक दैनन्दिनी
(डायरी)

(आर्यसमाज शताब्दी वर्ष)

संवत् २०३१-३२
आर्य संवत्सर १९६०८५३०७५
दयानन्दाब्द १४८
ईसवी सन्
१९७५

प्रत्येक पृष्ठ पर वैदिक सूक्ति
व
संध्या प्रार्थना हवन मंत्रों सहित

प्रकाशक—
—पंडिता राकेशरानी
जन-ज्ञान प्रकाशन
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
करौलबाग, नई दिल्ली-५

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

संपादक—

दूरभाष : ५६६६३९

—जगदीश विद्यार्थी, एम० ए०
—कु० ज्योत्स्ना, एम० ए०

द्वितीय संस्करण मूल्य ३) सजिल्द ४)

हिन्दुस्तान आफसैट प्रेस दिल्ली

प्रभु पुत्र बनने का मूल मंत्र

मुझे इस बात की कभी परवाह नहीं करनी कि संसार मेरे सम्बन्ध में क्या कहता है। अपितु—

मैं केवल यह सोचता रहूँ कि कोई ऐसा काम मैं न करूँ कि अपनी ही दृष्टि में गिर जाऊं।

卐

मेरे जीवन में जो ऐसे पृष्ठ हैं जिन्हें मैं छिपाना चाहता हूँ, बस वहीं मुझे गिराने वाले हैं।

प्रतिदिन रात्रि को सोते समय अपने दिन भर के कामों पर दृष्टि डालो और स्वयं सोचो कि इनमें से क्या तुम दुनियां से छिपाना चाहोगे। जिन्हें छिपाना पड़े ऐसे काम करना छोड़ दो। और सदा सोचो मैं कौन हूँ ? मैं इस संसार में क्यों आया हूं ? और मुझे यहाँ से क्या लेकर जाना है ?

—भारतेन्द्रनाथ
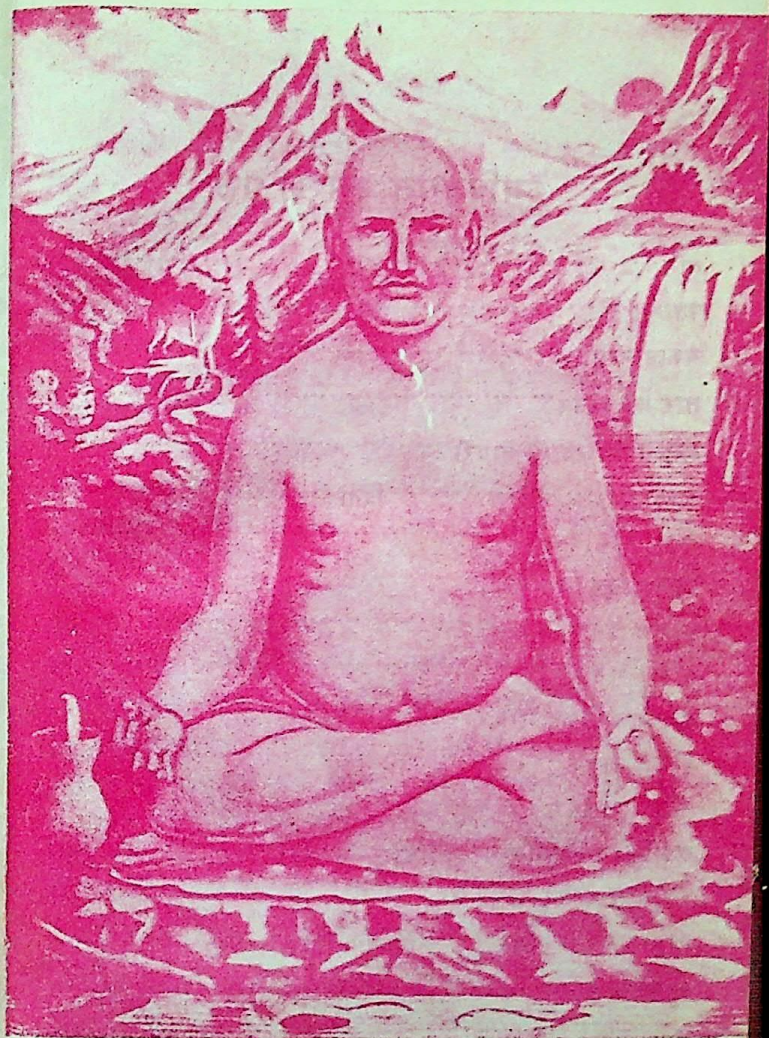
स्वामी दया नन्द जी सरस्वती

व्यक्तिगत स्मरण पृष्ठ

नाम..

पता..

मकान नम्बर..

तार का नम्बर..

जन्म तिथि स्वामी डायरी ....

वजन.............................दिनांक..................................

जन्म तिथि बच्चा ....

कार नम्बर...

कार लाइसेंस नम्बर..

साइकिल नम्बर...

साइकिल टोकन नम्बर..

रेडियो नम्बर..

रेडियो लाइसेंस नम्बर..

टेलीविजन लाइसेंस नम्बर...

टेलीफोन नम्बर दफ्तर....................घर..............................

बीमा पालिसी नम्बर..

आर्म्स लाइसेंस नम्बर..

अन्य बातें..

दैनिक सन्ध्या

प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन प्रातः सायं जीवन में सफलता के लिए संध्या अवश्य करनी चाहिए। संध्या करते हुए मन को एकाग्र कर स्वयं को और प्रभु को जानने का चिन्तन करना चाहिए।

पहले पहल सीखने वालों को चाहिए कि वे मन्त्रों को उच्च स्वर से बोलने का अभ्यास करें और मन्त्रार्थों का मन में ध्यान करें। मन्त्र ही वैदिक सन्ध्या के भाग हैं न कि अर्थ। अर्थ तो मन की एकाग्रता के लिए सहायक हैं।

गले का कफ आदि साफ करने के लिए सर्वप्रथम दाईं हथेली में जल लेकर निम्न मन्त्र से (अर्थविचारपूर्वक) तीन आचमन करें।

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभि स्रवन्तु नः ।। यजु० अ० ३६। मं० १२ ।।

भावार्थ—सबका प्रकाशक, सबको आनन्द देने वाला, और सर्वव्यापक ईश्वर मनोवांछित आनन्द की प्राप्ति तथा पूर्णानन्दयोग से तृप्त होने के लिए हमारा कल्याण करे और हम पर सब ओर से सुख और शान्ति की वर्षा करे।

तीन आचमन करने के बाद निम्न मन्त्रों से अंग स्पर्श करें—

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशो बलम्। ओं करतल कर पृष्ठे ।।

भावार्थ—हे ईश्वर! हमारी वाणी, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, नाभि हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु, करतल (हथेली) और हमारे हाथ सब बलवान् हों और हमारी कीर्ति का कारण बनें।

मार्जनम्

बाएँ हाथ में थोड़ा जल ले लें। दाएँ हाथ की मध्यमा और अनामिका से अपने अङ्गों का उस जल से मार्जन करें।

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र॥

भावार्थ—हे समस्त जगत् के जीवन के हेतु, प्राण से भी प्रिय परमात्मन्! मेरे शिर में पवित्रता हो। हे धर्मात्माओं को सब दुःखों से अलग करके सर्वदा सुख में रखनेवाले प्रभो! मेरे नेत्रों में पवित्रता हो। हे सर्वव्यापक सुखस्वरूप ईश्वर! मेरे कण्ठ में पवित्रता हो। हे महान्, पूजनीय प्रभो! मेरे हृदय में पवित्रता हो। हे सबको उत्पन्न करने वाले ईश्वर! मेरी नाभि में पवित्रता हो। हे दुष्टों के सन्तापकारक, सत्य-धर्म का प्रवर्तन करने वाले प्रभो! मेरे पैरों में पवित्रता हो। हे सत्यस्वरूप ईश्वर, मेरे शिर में फिर पवित्रता हो। हे सर्वव्यापक प्रभो! आप सर्वत्र पवित्रता करें।

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम्।

भावार्थ—हे प्रभो! आप समस्त जगत् के जीवन के हेतु और प्राणों से भी प्रिय हैं। आप धर्मात्माओं को सब दुःखों से अलग करके सर्वदा सुख में रखने वाले हैं। आप सर्वव्यापक, सबको धारण कर नियम में रखने वाले और सुखस्वरूप हैं। आप महान् और पूजनीय हैं। आप सबको उत्पन्न करने वाले हैं। आप दुष्टों के सन्तापकारक और न्यायाधीश हैं। आप सत्यस्वरूप हैं।

उपर्युक्त मन्त्र को बोलकर तीन प्राणायाम करें। प्राणायाम विधि यह है—

(क) एकदम सीधे होकर पद्मासन से बैठ जाएं। छाती, गर्दन और सिर तीनों एक सीध में रहें।

(ख) धीरे धीरे श्वास बाहर निकालें और श्वास निकाल देने के बाद उसे बाहर ही जितनी देर हो सके, रोक रखें।

(ग) जब और रोकना कठिन हो जाए, थोड़ा सा श्वास छोड़ कर धीरे-धीरे अन्दर श्वास लेने लगें। सांस को पूरी तरह भर लें। और रोक रखें।

(घ) जब और रोक रखना असम्भव हो जाए, तो पहले के

समान मांस को बाहर निकालें।

(ङ) ये क्रियाएँ काफी समय तक करते रहें, जिससे अन्दर की एक-एक नस-नाड़ी का व्यायाम हो जाए। परन्तु प्राणायाम करते समय उपर्युक्त प्राणायाम मन्त्र का जप करते जाएँ और अर्थ में मन एकाग्र रखें।

अघमर्षणम्

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो राऽयजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥
सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥

भावार्थ—समस्त संसार का धारण और पोषण करने और उसे वश में रखने वाले परमेश्वर ने पहली सृष्टियों में जिस प्रकार की रचना की उसी प्रकार, जीवों के पाप-पुण्य के अनुसार प्राणि-देह और अन्य सृष्टियों को बनाया है। प्राकृतिक, नैतिक और सामाजिक नियम, सूर्य, चन्द्र, द्युलोक, पृथिवी, अन्तरिक्ष, लोक-लोकान्तर, दिन, रात तथा सभी क्षणादि उसी की सामर्थ्य से बने हैं। उसकी इस अनन्त सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए हम सर्वत्र सब क्षणों में उसकी व्यापकता को अनुभव करते हुए पाप करने से दूर रहें।

इस प्रकार मनसा वाचा कर्मणा पापानुष्ठान के सर्वथा परित्याग का संकल्प करने के पश्चात् "ओ३म् शन्नो देवी०" इस पूर्वोक्त मन्त्र से आचमन करें।

मनसा परिक्रमा

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥

भावार्थ—पूर्व दिशा जो निरन्तर प्रगति की प्रतीक है। वह

हमारे हृदय को प्रकाशित और प्रेरित करे क्योंकि निरन्तर प्रगति हमारा पहला लक्ष्य है। हम भी अपने स्वामी के समान ज्ञानमय, बन्धनरहित, कल्याणकारी साधनों के स्वामी बनें। हमारे विचार स्वतन्त्र और ऊँचे हों, ताकि हम जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। हे प्रभो! हम अपने गुणों से शत्रु को भी मित्र बना लें।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२॥

भावार्थ—हमारी दक्षिण दिशा हमारे लिए ऐश्वर्य की प्रेरक बने क्योंकि ऐश्वर्य और दक्षता हमारा दूसरा लक्ष्य है। हम भी सच्चे अर्थों में अपनी इन्द्रियों के ईश्वर, और दुर्गुणों पर शासन करनेवाले बनें। आप्त विद्वानों को अपना मार्ग दर्शक चुनें ताकि हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकें और शत्रु भी हमारे मित्र हो जाएँ। हे प्रभो, हम पर ऐसी कृपा करो।

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः: तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥३॥

भावार्थ—हे पश्चिम दिशा के स्वामी प्रभो! आप हमारा जीवन आत्मचिन्तन की ओर प्रेरित कीजिए, क्योंकि भोगैश्वर्यों तथा सांसारिक इच्छाओं से पराङ्मुख होना हमारा तीसरा लक्ष्य है। हम भी निष्पाप और पवित्र होकर सबके लिए वरणीय और सर्वश्रेष्ट बनें। पापों से लड़ने तथा संग्राम के लिए उनका आह्वान करने की हम में सामर्थ्य हो। पवित्र मार्ग से प्राप्त अन्न की सहायता से हम अपने आप को ऐसा बनालें कि संसार में कोई हमारा शत्रु न हो।

उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥४॥

अथर्व ३-२९-४

भावार्थ—हे शान्तिप्रदाता सोम, परमेश्वर ! आप हमारी उत्तम भावनाओं और उत्तर दिशा को शान्ति और आनन्द से पूर्ण कीजिए, क्योंकि हमारा चौथा लक्ष्य शान्ति और भावनाओं व विचारों को ऊँचा बनाना है। हम भी, अपने पिता सोम के समान, शान्त हों। हम में दुर्भावनाओं और दुर्गुणों को फेंक देने की सामर्थ्य हो। परमात्मा के द्वारा दिए गये दण्डों को हम सहर्ष स्वीकार करते हुए इस प्रकार जीवन बिताएँ कि हम संसार में किसी के शत्रु न बनें।

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५॥

भावार्थ—विष्णो ! आप ध्रुव हैं, हमारे जीवन में दृढ़ता धैर्य गुण स्थापित कीजिये, क्योंकि मानसिक स्थिरता हमारा पाँचवाँ लक्ष्य है। हम, उस सर्वशक्तिमान् ईश्वर के समान, यज्ञस्वरूप बनें और प्रत्येक प्राणी में अपनत्व का अनुभव करें। हम भी वेदों की सहायता से सत्कर्म और सन्मार्ग को जानकर दूसरों को उनका उपदेश करें। हम वृक्ष-वनस्पतियों के समान दूसरों का सब प्रकार से उपकार करते हुए जीवन में आगे बढ़ें ताकि हम सभी के प्यारे बन सकें। शत्रु भी हमारे मित्र बन जाएँ।

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥

भावार्थ—हे ऊर्ध्व दिशा के स्वामी बृहस्पति ! आप हमारे कर्मों में सदा ऊँची भावनाएँ स्थापित कीजिये ! क्योंकि आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वोच्च स्थिति को प्राप्त करना हमारा छठा और अन्तिम लक्ष्य है। ज्ञान और कर्म में हम ऊँचे हों। हमारा अन्तःकरण शुद्ध और सात्त्विक हो ताकि हम इस पद को प्राप्त कर सकें। बादलों के समान ऊँचे चढ़कर सत्य ज्ञान, आनन्द और शान्ति की वर्षा से पीड़ितों का उपकार करें, ताकि हम सबके मित्र बनें और समस्त प्राणी हमारे मित्र बनें। हम पर निरन्तर सुख-शांति-आनन्द की वर्षा होती रहे।

उपस्थानम्

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥ य० अ० ३५ । १४

भावार्थ—हे प्रभु ! समस्त चराचर जगत् के आत्मा आपको देखते हुए अनन्द श्रद्धावान् होकर स्वप्रकाशस्वरूप,सर्वोत्कृष्ट सब दिव्य गुण वाले पदार्थों में अनन्तादि दिव्य गुण युक्त, धर्मात्माओं, मुमुक्षुओं और योगियों को सब प्रकार का आनन्द देनेवाले, जगत् के प्रलय के बाद भी नित्य स्वरूप में विराजमान, सर्वानन्दस्वरूप अज्ञानान्धकार से परे वर्तमान आपको हम प्राप्त हों ।

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ॥२॥ यजु० अ० ३३ मं० ३१ ॥

भावार्थ—जिससे ऋग्वेदादि चार वेद प्रसिद्ध हुए हैं, जो दिव्य गुण वाला और सब जीवादि जगत् का प्रकाशक है, जिसको केतु अर्थात् वेद और जगत् के पृथक्-पृथक् रचनादि नियामक गुण प्रकाशित कर रहे हैं, उस परमात्मा का विश्वविद्या की प्राप्ति के लिए हम लोग ध्यान करते हैं ।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥३॥ य० अ० ७ मं० ४२ ॥

भावार्थ—प्राणी और जड़ जगत् का जो आत्मा है, जो सूर्य और अन्य सब लोकों को वनाकर धारण और रक्षण करने वाला है, जो राग द्वेष रहित मनुष्य तथा अद्भुतस्वरूप विद्वानों के हृदय में सदा प्रकाशित रहता है, जो सकल मनुष्यों के सब दुःख नाश करने के लिए परम उत्तम बल है; वह परमेश्वर हमारे हृदयों में यथावत् प्रकाशित रहे ।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥ य० अ० ३६ मं० २४ ॥

भावार्थ—जो ब्रह्म सबका द्रष्टा, धार्मिक विद्वानों का परम हितकारक, तथा सृष्टि के पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्य स्वरूप से वर्तमान रहता है और सब जगत् का करने वाला है, उसी ब्रह्म को हम लोग सौ वर्ष पर्यन्त देखें, सुनें, उसी ब्रह्म का उपदेश करें, और उसकी कृपा से किसी के अधीन न रहें। उसी परमेश्वर की आज्ञा पालन और कृपा से सौ वर्षों के उपरान्त भी हम लोग देखें, जियें, सुनें, सुनावें और स्वतन्त्र रहें, अर्थात् निरोग शरीर, दृढ़ इन्द्रिय, शुद्ध मन और आनन्द सहित हमारा आत्मा सदा रहे।

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ य० अ० ३६। मं० ३॥

भावार्थ—परम पिता परमात्मा सब जगत् के जीवन का हेतु और प्राण से भी प्रिय है। वह मुक्ति की इच्छा करने वालों, मुक्तों और अपने सेवक धर्मात्माओं को सब दुःखों से अलग करके सर्वदा सुख में रखता है। सब जगत् में व्यापक होकर सबको नियम में रखता है और सबका ठहरने का स्थान तथा सुखस्वरूप है। जो सब जगत् का उत्पन्न करने हारा और ऐश्वर्य का देने वाला है, जो सबके आत्माओं का प्रकाश करने वाला और सब सुखों का दाता है, जो अत्यन्त ग्रहण करने योग्य है, जो शुद्ध विज्ञान स्वरूप है, उसको हम लोग सदा प्रेम-भक्ति से निश्चय करके अपने आत्मा में धारण करें जिससे कि वह परमेश्वर हमारी बुद्धियों को कृपा करके सब बुरे कर्मों से अलग करके सदा उत्तम कामों में प्रवृत्त करे।

समर्पणम्

हे ईश्वर ! दयानिधे ! भवत्कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।

भावार्थ—हे परमात्मन् ! आप की दया से इस जप उपासनादि कर्म के द्वारा हम शीघ्र ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति करें।

नमस्कारमन्त्रः

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

भावार्थ—जो सुखस्वरूप, संसार के उत्तम सुखों को देने वाला, कल्याणकर्त्ता, मोक्षस्वरूप अपने भक्तों को सुख देने वाला और धर्मकार्यों में युक्त करनेवाला, अत्यन्त मंगलस्वरूप, मोक्ष सुख का प्रदाता है, उस प्रभु को हमारा बारम्बार नमस्कार हो ।

प्रार्थना मन्त्र

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रन्तन्न आ सुव ॥१॥ यजु० अ० ३० । मं० ३ ॥

भावार्थ—हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्य-युक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन, और दुःखों को दूर कर दीजिये, और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वे हमको प्राप्त कराइए ।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥
यजु० अ० १३ । मं० ४ ॥

भावार्थ—जो प्रकाशस्वरूप है और जिसने प्रकाश करने वाले सूर्य चन्द्रादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो उत्पन्न हुए जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतन स्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्त्तमान था वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है । हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा की अति प्रेम से भक्ति किया करें ।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।३।
यजु० अ० २५ मं० १३ ॥

भावार्थ—जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने वाला है, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसके प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसके आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने वाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति विशेष करें अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।४।

यजु० अ० २३ । म० ३ ॥

भावार्थ—जो प्राण वाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप, सकल ऐश्वर्य के देने वाले परमात्मा के लिए अपनी सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।५।

यजु० अ० ३२ । मं० ६ ॥

भावार्थ—जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य और पृथ्वी को धारण किया है, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया है, जिस ईश्वर ने दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोकलोकान्तरों को विशेष मानयुक्त, अर्थात् जैसे पक्षी आकाश में उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

ऋ० म० १० । सू० १२१ । म० १० ॥

भावार्थ—हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा! आपसे भिन्न

दूसरा कोई इन सब उत्पन्न हुए जड़चेतनादिकों का तिरस्कार नहीं करता, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग आपका आश्रय लें और वाञ्छा करें, वे सब हमारी कामनायें सिद्ध हों, जिससे हम धनैश्वर्यों के स्वामी बनें।

स नो बन्धुर्जनिता स बिधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

यजु० अ० ३२। मं०

भावार्थ—हे मनुष्यो ! वह परमात्मा हमारा सहायक, सकल जगत् का उत्पादक, सब कार्यों को पूर्ण करने वाला, सम्पूर्ण लोकमात्र—नाम, स्थान, जन्मों—को जानता है। जिस परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होकर विद्वान लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य राजा और न्यायाधीश है। हम लोग मिलकर सदा उसकी भक्ति किया करें।

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम ॥८॥

यजु० अ० ५। मं० ३६॥

भावार्थ—हे स्वप्रकाशक ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने वाले, सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान तथा राज्यादि ऐश्वर्य अच्छे धर्म युक्त मार्ग से प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलता युक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए। इस कारण हम लोग आपकी नम्रतापूर्वक बहुत प्रकार की स्तुति और प्रशंसा सदा किया करें।

अथ अग्निहोत्रम्

प्रत्येक आर्य को प्रतिदिन पांच यज्ञ करने चाहिएँ। इन पांचों महायज्ञों का वर्णन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी "पञ्च-महायज्ञ विधि' में किया है। उनमें से एक है "देवयज्ञ" जिसे लोक भाषा में "हवन" कहते हैं।

यह हवन [illegible] और [illegible] दोनों [illegible] के समान

ही किया जाना चाहिए। सायंकाल समय न मिले तो प्रातःकाल ही दोनों कालों की आहुतियां दे देनी चाहिएं।

इस अध्याय में पहले दैनिक यज्ञ के मन्त्र और फिर विशेष यज्ञ में बोले जाने वाले सामान्य प्रकरण के मन्त्र दिये गये हैं। विशेष यज्ञ सदा दैनिक यज्ञ के बाद ही करना चाहिये।

आचमनम्

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥
ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥

तैत्तिरीय आरण्यक प्र० १० । अनु० ३२, ३५ ॥

ऊपर लिखे एक-एक मन्त्र को बोलकर यज्ञ पर बैठे हुए सब लोग एक-एक आचमन करें।

अंगस्पर्श मन्त्र

अब थोड़ा जल बाएँ हाथ में ले लें और दाएँ हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों को मिलाकर, जल स्पर्श करके, प्रथम दक्षिण और पश्चात् वाम अंगों को निम्नलिखित मन्त्रों से स्पर्श करें।

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु।
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु।
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु।
ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु।
ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।

(पारस्कर गृह्य० १, ३, २५)

अग्न्याधानम्

ओं भूर्भुवः स्वः।

—इस मन्त्र का उच्चारण करके, घृत का दीपक जला, उससे कपूर में अग्नि लगा, किसी एक पात्र में धर, उसमें छोटी

लकड़ियां लगाकर, यजमान या पुरोहित उस पात्र को दोनों हाथों से उठा, यदि गर्म हो तो चिमटे से पकड़ कर अगले मन्त्र से अग्न्याधान करें।

—ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिविदेवयजनिपृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥१॥
(यजु० अ० ३। म० ५)

—पूर्वोक्त मन्त्र से वेदी के बीच में अग्नि को धर, उस पर छोटे-छोटे काष्ठ और थोड़ा कपूर धर अगला मन्त्र पढ़ के व्यजन से अग्नि को प्रदीप्त करें।

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते
सᳫं सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च
सीदत ॥
(यजु० अ० १५। मं० ५४)

—जब अग्नि समिधाओं में प्रविष्ट होने लगे तब चन्दन की अथवा पलाश की तीन लकड़ियां आठ-आठ अंगुल की घृत में डुबा, उनमे से एक-एक निकाल, नीचे लिखे अनुसार अग्नि में चढ़ाएं।

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम।
(आश्वलायन गृह्य० १, १०, १२)

—इस मन्त्र से एक समिधा डालें।

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम॥
(यजु० ३, २)

—इससे और अगले मंत्र से एक और समिधा डालें।

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम॥ (यजु० ३, १)

तन्त्वा समिद्‌भिरंगिरो घृतेन वर्द्धयामसि ।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा । इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम ॥
(यजु० ३. ३)

—इस मन्त्र से तीसरी समिधा डालें ।

इस प्रकार समिदाधान करने के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को पांच बार पढ़कर हर बार घृत की आहुति दें ।

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम ॥

जल प्रोक्षणम्

तत्पश्चात् अंजलि में जल लेकर वेदी के पूर्व आदि दिशाओं में चारों ओर निर्देशानुसार छिड़कें ।

ओं अदितेऽनुमन्यस्व । पूर्व में
ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व । पश्चिम में
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व । उत्तर में
(गोभिल गृ० सू०—१, ३, १ से ३ तक)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ यजु० ३०. १ । इस मंत्र से चारों ओर ।

आघारावाज्याहुति

निम्नलिखित मन्त्रों से निर्देशानुसार यजमान घी की दो आहुतियां दें ।

ओं अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये—इदं न मम ॥
इस मन्त्र से वेदी के उत्तर भाग अग्नि में ।

ओं सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय—इदं न मम ॥
इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग अग्नि में ॥
(गो० गृ० प्र० १ । खं० ८ । सू० २४)

आज्यभागाहुति

यजमान निम्नलिखित दो मन्त्रों से कुण्ड के मध्य में दो घी की आहुतियाँ दें।

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये—इदं न मम ॥
ओं इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय—इदं न मम ॥

प्रातःकाल की आहुतियाँ

इसके पश्चात् यजमान तथा अन्य होता आदि प्रातःकाल हवन में निम्नलिखित मन्त्रों से घी और सामग्री की आहुतियाँ दें।

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥
ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥
ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥३॥
ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या ।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥४॥
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।
इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ॥
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।
इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम ॥
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।
इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम ॥
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः
प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा । इदमग्निवाय्वा-दित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम ॥

(तैत्तिरीय आरण्यक १०, २)

ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।

(तैत्तिरीय आरण्यक १०, ५)

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥६॥
(यजु० अ० ३२ । मं १४)

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रन्तन्न आ सुव स्वाहा ॥७॥
(यजु० अ० ३० । मं० ३)

ओं अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ॥८॥ (यजु० अ० ४० । मं० १६)

सायंकाल की आहुतियाँ

यहाँ से लेकर "आपो ज्योतिः" तक के सब मन्त्र तब बोलने चाहिए जब दोनों समय का हवन एक ही समय अर्थात् प्रातःकाल ही करना हो । यदि प्रातः सायं अलग-अलग समय में यज्ञ करना हो तो सायंकाल में "सूर्यो ज्योतिः" के स्थान पर "अग्निर्ज्योतिः" का पाठ करके शेष मन्त्र "आपो ज्योतिः" से लेकर 'अग्ने नय सुपथा" तक प्रातः सायं दोनों समय एक समान बोलने चाहिए ।

निम्नलिखित मंत्रों से सायंकाल की आहुतियाँ देनी चाहिये ।

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥

इस तीसरे मन्त्र को मन से उच्चारण करके तीसरी आहुति देनी चाहिए—

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या । जुषाणोऽग्निर्वेतु स्वाहा ॥४॥ (यजु० अ० ३ । मं० ९, १०)

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्रों से आहुति दें ।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥

ओं भुववायवेऽपानाय स्वाहा ॥
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।
ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।

इसके बाद यदि इच्छा हो तो गायत्री मन्त्र से तीन बार आहुति दे सकते हैं ।

पूर्णाहुति

अन्त में निम्नलिखित मन्त्र तीन बार पढ़कर तीन पूर्णाहुति दें ।

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ॥

भावार्थ—हे सर्वशक्तिमन् प्रभो ! आपने संसार में जो कुछ भी रचा है वह सब आप में पूर्ण है । यह यज्ञ तथा हमारे जीवन का प्रत्येक काम पूर्ण हो । हम सब भी आपका ही आदेश पालन करें ।

इति दैनिक यज्ञः ।

———

विशेष यज्ञ प्रकरण

जब कोई विशेष यज्ञ अथवा संस्कार करना हो, उस समय आचमन से लेकर आज्यभागाहुति तक दैनिक यज्ञ पहले करना चाहिए । उसके पश्चात् निम्नलिखित विशेष मन्त्रो से आहुति देकर तत्पश्चात् संस्कार या प्रधान होम करके और गायत्री मन्त्रों से आहुति देने के बाद पूर्णाहुति देनी चाहिए ।

ओं अग्नये स्वाहा । इदमग्नये—इदन्न मम ॥
ओं सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय—इदन्न मम ॥
ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये—इदन्न मम ॥
ओं इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय—इदन्न मम ॥

ओं भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये--इदं न मम।।
ओं भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे--इदं न मम।।
ओं स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय--इदं न मम।।
ओं भूर्भुवःस्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः--इदं न मम।।

स्विष्टकृदाहुति

इस मन्त्र से घृत के साथ भात की आहुति दें।

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम।। (आश्व० १।१०, २२)

प्राजापत्याहुति

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये—इदन्न मम।।

इस मन्त्र को मन में बोलकर आहुति दें।

आज्याहुति मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।१।।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।।२।।

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा ।। इदमग्नये पवमानाय—इदन्न मम ।।३।। (ऋ० मं० ९ । सू० ६६ । मं० १९-२०)

ओं भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा ।। इदं प्रजापतये—इदन्न मम ।।४।।

अष्टाज्याहुति

इन मन्त्रों से अन्त तक घी के साथ सामग्री की आहुति दें ।

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ।। इदमग्नीवरुणाभ्याम् । इदन्न मम ।।१।।

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा ।।

ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय त्वामवस्युराचके स्वाहा ।। इदं वरुणाय—इदन्न मम ।। (ऋक् १, २५, १९)

ओ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा ।। इदं वरुणाय—इदन्न मम ।।

(ऋ० मं० १ । सू० २४ । मं० ११)

ओ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।।

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः—इदन्न मम ।।५।।

ओ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि ।

अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजँ स्वाहा। इदमग्नये अयसे—इदन्न मम ॥६॥ (कात्या० २५—१।११)

ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च—इदन्न मम ॥७॥

(ऋ० मं० १। सू० २४। मं० १५)

ओं भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञँ हिँसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्याम्—इदन्न मम ॥८॥

(यजु० अ० ५। मं० ३)

ईश्वर भक्ति के भजन

पूजनीय प्रभो! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिये।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक-सागर से तरें॥
अश्वमेधादिक रचाएँ यज्ञ पर-उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें॥
भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की॥
लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु-जल सर्वत्र हों शुभ गंध को धारण किये॥
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो॥
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे॥

(२)

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद ।
जिसका यश नित गाते हैं गंधर्व मनिजन धन्यवाद ।।
मन्दिरों, में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर ।
देते हैं लगातार सौ सौ बार मुनिवर धन्यवाद ।।
करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर ।
पाते हैं आनन्द, मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद ।।
कूप मे, तालाव में सिन्धु की गहरी धार में ।
प्रेम-रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद ।।
शादियों में, कीर्त्तनों में, यज्ञ और उत्सव के आद ।
मीठे स्वर से चाहिए करें नारी-नर सब धन्यवाद ।।
गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर की स्तुति ।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर-धर धन्यवाद ।।

(३)

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान् तुम्हारे चरणों में ।
है बिनती यही. छिन-छिन पल-पल रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
यदि वैरी सब ससार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने ।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
चाहे संकट ने आ घेरा हो, चाहे चारों ओर अन्धेरा हो ।
पर चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।
चाहे अग्नि परीक्षा में जलना हो, चाहे कांटों पर चलना हो ।
चाहे छोड़ के देश बिछुड़ना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

(४)

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में ।।
मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूँ जगती भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।
या तो मैं जग से दूर रहूँ, या जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में ।।
यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले, मैं तव चरणों का पुजारी बनूं ।
मुझ पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।।

जब-जब संसार का बन्दी बन, दरबार में तेरे आऊं मैं।
हो मेरे पापों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में॥
मुझ में तुझ में है भेद यही, मैं नर हूँ तू नारायण है।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥

(५)

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुमही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो॥
सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नासनहारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो॥
भुलि हैं हम ही तुम को तुम तो, हमारी सुधि नाहीं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो॥
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समुझे विरले बुधिवारे हो।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे, मन मन्दिर के उजियारे हो॥
यहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्रानन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय प्रताप हरी, केहि के अब और सहारे हो॥

(६)

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी भगवन् पूरी होय॥
विद्या बुद्धि, तेज, बल, सबके भीतर होय।
दूध पूत धन धान्य से, वंचित रहे न कोय॥
आपकी भक्ति प्रेम से, सब होवें भरपूर।
राग द्वेष से चित मेरा, कोसों भागे दूर॥
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश॥
पाप से हमें बचाइये, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय के, सबको करो निहाल॥
दिल में दया, उदारता, उर में प्रेम अपार।
सात्त्विक धीरज वीरता, सबको दो करतार॥
तुम से यह विनती करूँ, सुनिये कृपानिधान।
साधु-संग सुख दीजिए, दया नम्रता दान॥

(७)

शरण प्रभु की आओ रे ! यही समय है प्यारे ।
आओ हरि गुण गाओ रे ! यही समय है प्यारे ।।
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे ।
अमृत झरना झरता इससे, पीके अमर हो जाओ रे ।।
ईर्ष्या, द्वेष, कपट को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे ।
हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे ।।
कर लो नाम हरि का सुमिरन, अन्त को ना पछताओ रे ।
छोटे-बड़े सब मिल के खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे ।।

(८)

यही है आरजू भगवन्, मेरा जीवन यह आला हो ।
पर उपकारी, सदाचारी व लम्बी उम्र वाला हो ।।
सरलता, शील और सद्गुण हों भूषण मेरे जीवन के ।
सचाई सादगी श्रद्धा के, मन सांचे में ढाला हो ।।
तजूं छल, झूठ, चालाकी, बनूं सत्संग अनुरागी ।
गुनाहों और खताओं से, मेरा जीवन निराला हो ।।
तेरी भक्ति में ऐ भगवन् ! लगा दूं अपना मैं तन-मन ।
दिखावे के लिए हाथों में थैली हो न माला हो ।।
मेरा वेदोक्त हो जीवन, कहाऊँ धर्म अनुरागी ।
रहूँ आज्ञा में वेदों की न, हुक्मे वेद टाला हो ।।
तजूं सब खोटे भावों को, तजूं सब वासनाओं को ।
तेरे विज्ञान दीपक का मेरे मन में उजाला हो ।।
सदाचारी रहूँ हर दम, बुराई दूर हो मन से ।
क्रोध और काम ने मुझ पर न जादू कोई डाला हो ।।
मुसीबत हो कि राहत हो, रहूँ हर हाल में साबिर ।
न घबराऊं, न पछताऊँ, न कुछ फरियाद आला हो ।।
पिलादे मोक्ष की घुट्टी, मरन जीवन से हो छुट्टी ।
विनय अन्तिम यह अर्जुन की अगर मंजूरे वाला हो ।।

(९)

दु:ख दूर कर हमारा संसार के रचैया ।
जल्दी से दो सहारा मझधार में है नैया ।।

तुम बिन कोई हमारा रक्षक नहीं यहां पर।
ढूंढा जहान सारा तुम-सा नहीं रखैया॥
दुनियाँ में खूब देखा आँखें पसार करके।
साथी नहीं हमारा माँ, बाप और भैया॥
सुख के सभी हैं साथी, दुनियाँ के मित्र सारे।
तेरा ही नाम प्यारा, दुःख दर्द में बचैया॥
दुनिया में फँसके मुझको हासिल हुआ न कुछ फल।
तेरे बिना हमारा कोई नहीं सुनैया॥
चारों तरफ से हम पर गम की घटा है छाई।
सुख का करो उजाला प्रकाश के करैया॥
अच्छा बुरा है जैसा राजी में 'राम' रहता।
चेरा है यह तुम्हारा, सुध लेओ सुध लिवैया॥

(१०)

भगवन्

भगवन्! भले बुरे हम तेरे।
द्वार तुम्हारे आये मांगते, बन्धन काटो मेरे।
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥
तू स्वामी है जगती तल का, हम सेवक अज्ञानी।
तू है अजर अमर अविनाशी, हम मूढ़मति अभिमानी॥
भूल तुझे सब भटक रहे हैं, शान्ति दान अब दे रे।
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥
कोटि-कोटि पापों से पूरित, मेरी जीवन गाथा।
अन्धकार में भटक रही है जीवन तंत्री त्राता॥
ज्योति दिखा हे नाथ उबारो, माँग रहे नित टेरे।
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥
ज्ञान दीप को भूल बावरे, माया पीछे धाये।
सत्य वस्तु को छोड़ भला, क्या छाया कोई पाये॥
राह दिखा हे दीन दयालु, द्वार पड़े हैं तेरे।
भगवन्! भले बुरे हम तेरे॥
आज हमारी नौका डगमग, डोल रही हे स्वामी।
जगत् भँवर में गोते खाता, व्यथित हुआ है प्राणी॥

एक तुम्हारी आशा अब है, हमको सांझ सबेरे।
भगवन् ! भले बुरे हम तेरे॥
जीवन सफल बनाओ भगवन् ! दो आशीष हमें तुम।
तुझमें खो दें अपनेपन को, और कहें केवल तुम॥
जगत् उद्धारक परमपिता हो, एक सत्य हो मेरे।
भगवन् ! भले बुरे हम तेरे॥

(११)

हमें शक्ति दो नाथ ऐसी कि मिलकर,
दयानन्द का काम पूरा करें हम।
उसी की बताई हुई राह पर हम,
सदा ही चलें औ सदा ही बढ़ें हम।
अधूरा पड़ा कार्य वेदों का भारी,
सिसकती खड़ी आज दुनिया है सारी।
प्रभो ! शक्ति दो हम, धरा को उठाएँ,
बिलखते हुए मानवों को हंसाएँ।
पढ़ें 'वेद' दिन रात सबको पढ़ाएँ।
उठें एक होकर, लिए ओ३म् ध्वज को,
बनें आर्य औ' आर्य सबको बनाएँ।

—राकेश रानी

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता॥

तुम हो एक अगोचर. सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूँ, दया:मय, तुमको मैं कुमति।
दीनबन्धु दुखहर्त्ता तुम रक्षक मेरे ।
करुणा-हस्त बढ़ाओ, द्वार पडा तेरे ।।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
'श्रद्धा' भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।।

सँगठन सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इडस्पते समिध्यसे स नो वसून्या भर ।।१।।
हे प्रभु ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन वृष्टि को ।।
संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथापूर्वे संजाना ना उपासते ।।२।।
प्रेम से मिल कर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भाँति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो ।।
समानो मंत्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम् ।
समानं मंत्रमभि मंत्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि ।।३।।
हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों ।।
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व: ।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति ।।४।।
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा ।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ।

प्रात:काल उठकर पाठ के मन्त्र

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे
प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।

प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पति
प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ॥१॥

ऋ० म० ७ । सू० ४१ । मं० १

अर्थ—(प्रातः) प्रभात समय में (अग्निम्) स्वप्रकाशस्वरूप (प्रातःइन्द्रम्) परमैश्वर्य्य के दाता और परमैश्वर्य्ययुक्त (प्रातः) (मित्रावरुणा) प्राण उदान के समान प्रिय और सर्वशक्तिमान् (प्रातः) (अश्विना) सूर्य चन्द्र को जिसने उत्पन्न किया है उस परमात्मा की (हवामहे) स्तुति करते हैं और (प्रातः) (भगम्) भजनीय, सेवनीय, ऐश्वर्य्ययुक्त (पूषणम्) पुष्टिकर्त्ता (ब्रह्मणस्पतिम्) अपने उपासक वेद और ब्रह्माण्ड के पालन करने हारे (प्रातः) (सोमम्) अन्तर्यामी प्रेरक (उत) और (रुद्रम्) पापियों को रुलाने हारे और सर्वरोगनाशक जगदीश्वर की (हुवेम) स्तुति-प्रार्थना करते हैं।

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥२॥

ऋ० मं० ७ । सू० ४१ । मं० २

अर्थ—(प्रातः) पांच घड़ी रात्रि रहे (जितम्) जयशील (भगम्) ऐश्वर्य के दाता (उग्रम्) तेजस्वी (अदितेः) अन्तरिक्ष के (पुत्रम्) सूर्य को उत्पत्ति करने हारे और (यः) जो कि सूर्यादि लोकों का (विधर्ता) विशेष करके धारण करने हारा (आध्रः) सब ओर से धारणकर्त्ता (यं, चित्) जिस किसी का भी (मन्यमानः) जानने हारा (तुरश्चित्) दुष्टों का दण्ड दाता और (राजा) सबका प्रकाशक है (यं) जिस (भगम्) भजनीय स्वरूप को (चित्) भी (भक्षीति) इस प्रकार सेवन करता हूं और इसी प्रकार भगवन् परमेश्वर सबको (आह) उपदेश करता है कि तुम जो मैं सूर्यादि जगत् का बनाने और दर्शन करने हारा हूँ, उस मेरी आज्ञा में चला करो। इससे (वयम्) हम उसकी (हुवेम) स्तुति करते हैं।

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ॥३॥

ऋ० मं० ७ । सू० ४१ । मं० ३ ।

अर्थ—हे [भग] भजनीय स्वरूप ! [प्रणेतः] सबके उत्पादक सत्याचार में प्रेरक [भग] ऐश्वर्यप्रद [सत्यराधः] सत्य धन के देने हारे [भग] धर्मात्माओं के ऐश्वर्यदाता [नः] हमको [इदम्] इस [धियम्] प्रज्ञा को [ददत्] दीजिये और उसके दान पर हमारी [उदव] रक्षा कीजिये। हे [भग] आप [गोभिः] गाय आदि [अश्वैः] घोड़े आदि उत्तम पशुओं के योग से राज्यश्री को [नः] हमारे लिए [प्रजनय] प्रकट कीजिये। हे [भग] आपकी कृपा से हम लोग [नृभिः] उत्तम मनुष्यों से [नृवन्तः] बहुत वीर मनुष्यों वाले [प्रस्यामः] अच्छे प्रकार होवें।

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्र पित्व उत मध्ये आह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्यामः ॥४॥

ऋ० मं० ७। सू०। मं० ४॥

हे भगवन् ! आपकी कृपा (उत) और अपने पुरुषार्थ से हम लोग (इदानीम्) इसी समय (प्रपित्वे) प्रकर्ष व उत्तमता की प्राप्ति में (उत) और (अह्नाम्) इन दिनों के मध्य में (भगवन्तः) ऐश्वर्ययुक्त और शक्तिमान् (स्याम) होवें (उत) और हे भगवन्। परमपूजित असंख्य धन देने हारे (सूर्यस्य) सूर्य लोक के (उदिता) उदय में (देवानां) पूर्ण विद्वान् धार्मिक आप लोगों की (सुमतौ) अच्छी उत्तम प्रजा (उत) और सुमति में (वयम्) हम लोग (स्याम) प्रवृत्त रहें।

भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तंत्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ।५।

ऋ० मं० ३। सू० ४१। मं० ५॥

हे (भग) सकलैश्वर्य सम्पन्न जगदीश्वर जिससे (तम्) उस (त्वा) आप की (सर्वः) सब सज्जन (इत् जोहवीति) निश्चय करके प्रशंसा करते हैं (सः) सो आप हे (भग) ऐश्वर्यप्रद (इह) संसार और (नः) हमारे गृहाश्रम में (पुर एता) अग्रगामी, आगे आगे सत्य कर्मों में बढ़ाने हारे (भव) होइए और जिससे [भगः एव] सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त और समस्त ऐश्वर्य के दाता होने से आप ही हमारे (भगवान्) पूजनीय देव (अस्तु) होइए, (तेन) इसी हेतु से (देवाः वयम्) हम लोग (भगवन्तः) सकलैश्वर्य सम्पन्न होके सब संसार के उपकार में तन, मन व धन से प्रवृत्त (स्याम) होवें।

卐

रात्रि को सोते समय पाठ करने के मंत्र

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२१॥

भावार्थ—जो दिव्यगुणों से युक्त, जागते हुए का मन, दूर अधिक जाता है और वह सोते हुए का उसी प्रकार जाता है। दूर जाने वाला और विषयों के प्रकाश चक्षुरादि इन्द्रियों का जो प्रकाश है वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला होवे।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२२॥

भावार्थ—हे जगत्पते! जिस मन से सत्कर्मनिष्ठ, मन को दमन करने वाले, बुद्धिमान् लोग अग्निहोत्रादि कार्यों में और वैज्ञानिक युद्धादि व्यवहारों में इष्ट कर्मों को करते हैं, और जो अद्भुत प्राणिमात्र के भीतर मिला हुआ है वह मेरा मन श्रेष्ठ संकल्प वाला हो।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तममृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२३॥

भावार्थ—हे प्रभो! जो बुद्धि का उत्पादक और स्मृति का साधन तथा धैर्यस्वरूप और मनुष्यों के भीतर नाशरहित प्रकाश स्वरूप है, जिसके बिना कोई भी काम नहीं किया जाता, वह मेरा मन शुद्ध करने वाला हो।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।२४।

भावार्थ—हे सर्वेश्वर! जिस नाश रहित मन से भूत, वर्तमान भविष्यत् यह सब जाना जाता है और जिसके प्रभाव से सात कर्मेन्द्रियों द्वारा यज्ञ विस्तृत किया जाता है, वह मेरा मन शुभ विचार वाला हो।

यस्मिन्नृचः सामयजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२५॥

भावार्थ--हे अखिलोत्पादक ! जिस शुद्ध मन में ऋग्वेद और सामवेद तथा यजुर्वेद, रथ की नाभि में अरों की नाईं स्थित है और जिसमें प्राणियों का समस्त ज्ञान सूत्र में मणियों के समान सम्बद्ध है, वह मन वेदादि सत्य शास्त्रों के प्रचार रूप संकल्प वाला हो।

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभिशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्प-मस्तु ॥२६॥

भावार्थ—अच्छा सारथी जिस प्रकार लगामों से वेगवाले घोड़ों को बलात् ले जाता है, इसी प्रकार जो मन मनुष्यों को इधर-उधर विचार क्षेत्र में ले जाता है, जो हृदय में स्थित और कभी बूढ़ा न होने वाला तथा अत्यन्त वेगवान् है। वह मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो।

वैदिक राष्ट्रगीत

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ यजु० २२।२२

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेज धारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी ॥
होंवे दुधारु गौवें, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।
बलवान सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें ॥
फल फूल से लदी हों, औषध अमोध सारी।
हो योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

आर्य-लक्षण

□ □

कर्त्तव्यमाचरन्‌ कामप्रकर्त्तव्यमनाचरन्‌ ।
तिष्ठति प्रकृताचारे यः स आर्य इति स्मृतः ।

—जो आकृति, प्रकृति, सभ्यता, शिष्टता, धर्म, कर्म, ज्ञान, विज्ञान और आचार, विचार, शील, स्वभाव, सदाचार में स्वभावतः संलग्न और श्रेष्ठ हो, उसे आर्य कहते हैं ।

●

ऋषि : जिन्होंने वेदों का ज्ञान जनता तक पहुँचाया

□ □

१. अत्रि   २. वसिष्ठ   ३. भृगु
४. अंगिरस   ५. भारद्वाज   ६. विश्वामित्र
७. गौतम : और आठवें ऋषि दयानन्द

●

आर्यों की आश्रम-व्यवस्था

□ □

१. ब्रह्मचर्य   २. गृहस्थ   ३. वानप्रस्थ   ४. संन्यास

आर्य-जाति के सोलह संस्कार

१. गर्भाधान   २. पुंसवन   ३. सीमन्तोन्नयन   ४. जातकर्म
५. नामकरण   ६. निष्क्रमण   ७. अन्नप्राशन   ८. चूड़ाकर्म
९. यज्ञोपवीत   १०. वेदारम्भ   ११. समावर्तन   १२. विवाह
१३. गार्हपत्य   १४. वानप्रस्थ   १५. संन्यास   १६. अन्त्येष्टि

प्रतिदिन का वेतन

१) से १००) तक पानेवाले का

वेतन	२८ दिन	२९ दिन	३० दिन	३१ दिन
रुपया	रु० पै०	रु० पै०	रु० पै०	रु० पै०
१	०.०४	०.०३	०.०३	०.०३
२	०.०७	०.०७	०.०७	०.०६
३	०.११	०.१०	०.१०	०.१०
४	०.१४	०.१३	०.१३	०.१३
५	०.१८	०.१७	०.१७	०.१६
६	०.२१	०.२१	०.२०	०.१९
७	०.२५	०.२४	०.२३	०.२३
८	०.२९	०.२८	०.२७	०.२६
९	०.३२	०.३१	०.३०	०.२९
१०	०.३६	०.३४	०.३३	०.३२
२०	०.७१	०.६९	०.६७	०.६५
३०	१.०७	१.०३	१.००	०.९६
४०	१.४३	१.३८	१.३३	१.२९
५०	१.७९	१.७२	१.६७	१.६१
१००	३.५७	३.४५	३.३३	३.३२

०आमदनी और खर्च का हिसाब रखें। ०आमदनी से अधिक खर्च न करें।
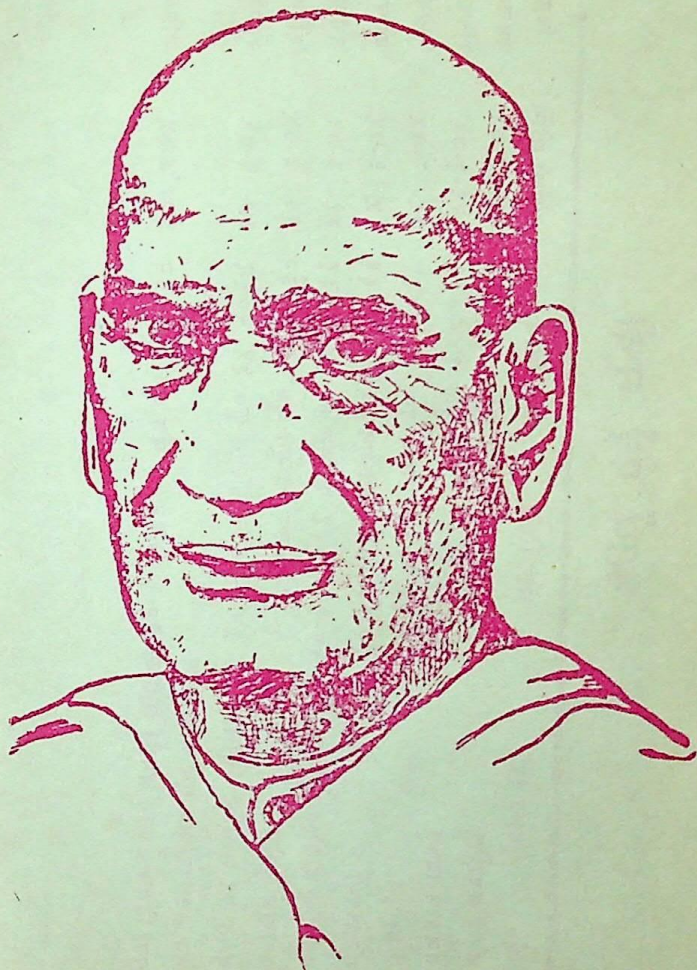
२३ दिसम्बर : अमर शहीद ! श्रद्धानन्द

आर्य पर्व सूची

क्रम सं०	नाम पर्व	सौर तिथि	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी तीथि	दिन
२	मकर संक्रान्ति	२-११-२०३१	पौष शु० २, २०३१	१४- १-७५	मंगलवार
१	गणतन्त्र दिवस	१४-११-२०३१	पौष शु० १४-२०३१	२६-१-७५	रविवार
३	वसंत पंचमी	५-१२-२०३१	माघ शु० ५, २०३१	१६- २-७५	रविवार
४	सीताष्टमी	२२-१२-२०३१	फाल्गुन कृ० ८, २०३१	५- ३-७५	बुधवार
५	दयानन्द बोधोत्सव (शिवरात्रि)	२८-१२-२०३१	फाल्गुन कृ० १४, २०३१	११- ३-७५	मंगलवार
६	लेखराम तृतीय	३- १-२०३२	फाल्गुन शु० ३, २०३२	१६- ३-७५	रविवार
७	वसंत नव सस्येष्टि (होली)	१४-१-२०३२	फाल्गुन शु० १५, २०३२	२७- ३-७५	बृहस्पतिवार
८	नव संवत्सरोत्सव एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस : आर्य समाज शताब्दी	३०-१- ०३२	चैत्र शु० १, २०३२	१२- ४-७५	शनिवार

९	वैशाखी	१-२-२०३२	चैत्र शु० २, २०३२	१३- ४-७५	रविवार
१०	राम नवमी	८-२-२०३२	चैत्र शु० ९, २०३२	२०- ४-७५	रविवार
११	हरि तृतीय (हरियाली तीज)	२६-५-२०३२	श्रावण शु० ३, २०३२	१०- ८-७५	रविवार
१२	श्रावणी उपाकर्म एवं सत्याग्रह बलिदान दिवस	७-६-२०३२	श्रावण शु० १५, २०३२	२१- ८-७५	बृहस्पतिवार
१३	कृष्ण जन्माष्टमी	१६-६-२०३२	भाद्रपद कृ० ८, २०३२	३०- ८-७५	शनिवार
१४	विजय दशमी	२-७-२०३२	आश्विन शु० १० २०३२	१४-१०-७५	मंगलवार
१५	गुरु विरजानन्द निर्वाण दिवस	२४-६-२०३२	आश्विन शु० ५, २०३२	९-१०-७५	बृहस्पतिवार
१६	ऋषि निर्वाणोत्सव	१८-८-२०३२	कार्तिक कृ० १५, २०३२	३-११-७५	सोमवार
१७	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	८-६-२०३२	पौष कृ० १४, २०३२	२३-१२-७५	रविवार
१८	स्वतन्त्रता दिवस	१५ अगस्त १९७५			शुक्रवार

टिप्पणी—देशी तिथियों के घट बढ़ जाने से तारीखों में परिवर्तन हो सकता है।

आर्य समाज के नियम

★★★

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है ।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है ।

३—वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये ।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है—अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

७—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये ।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें । □
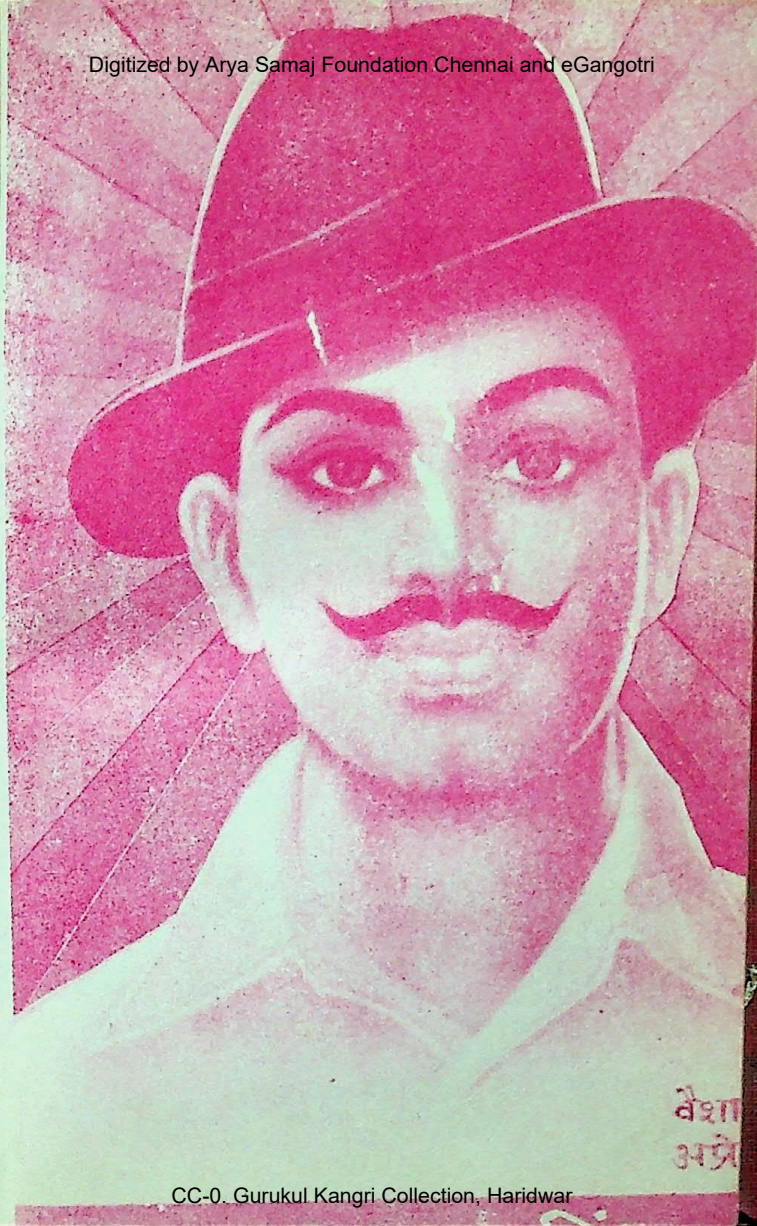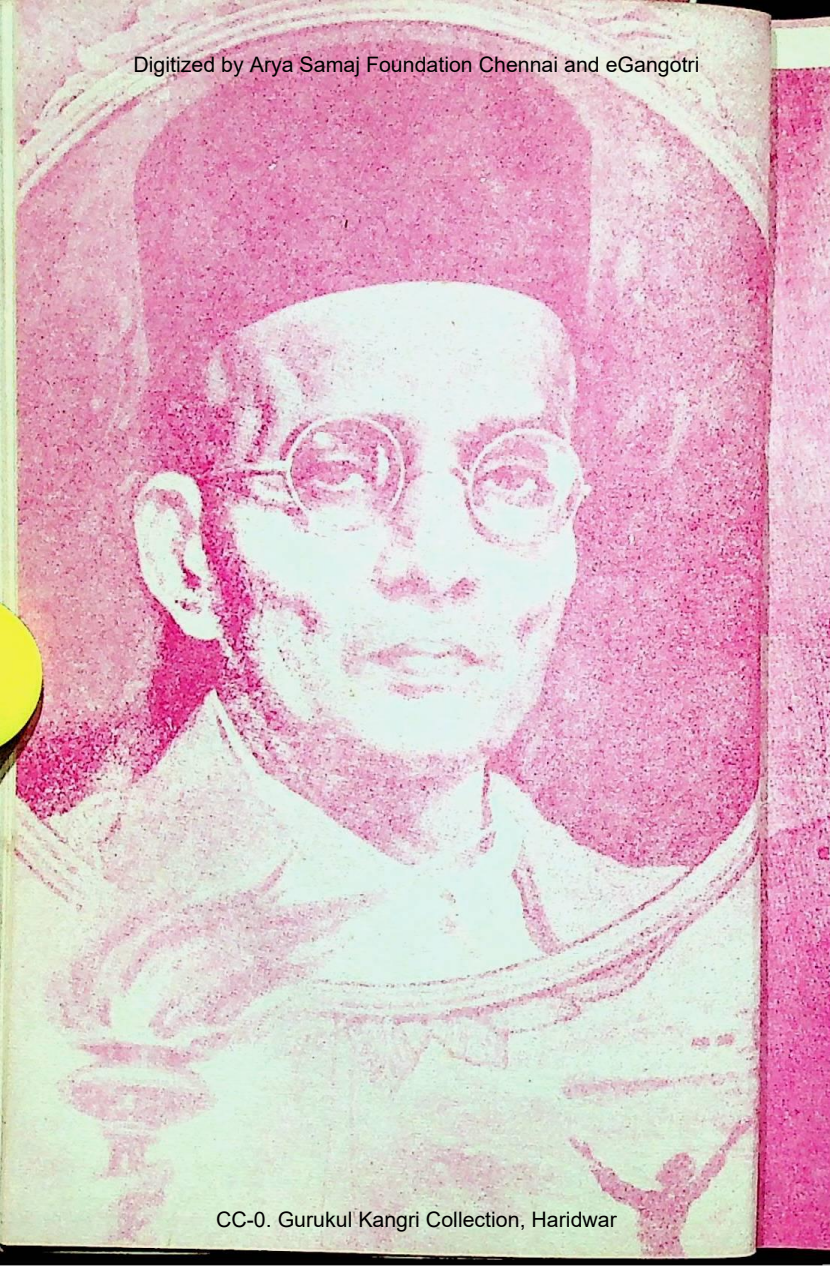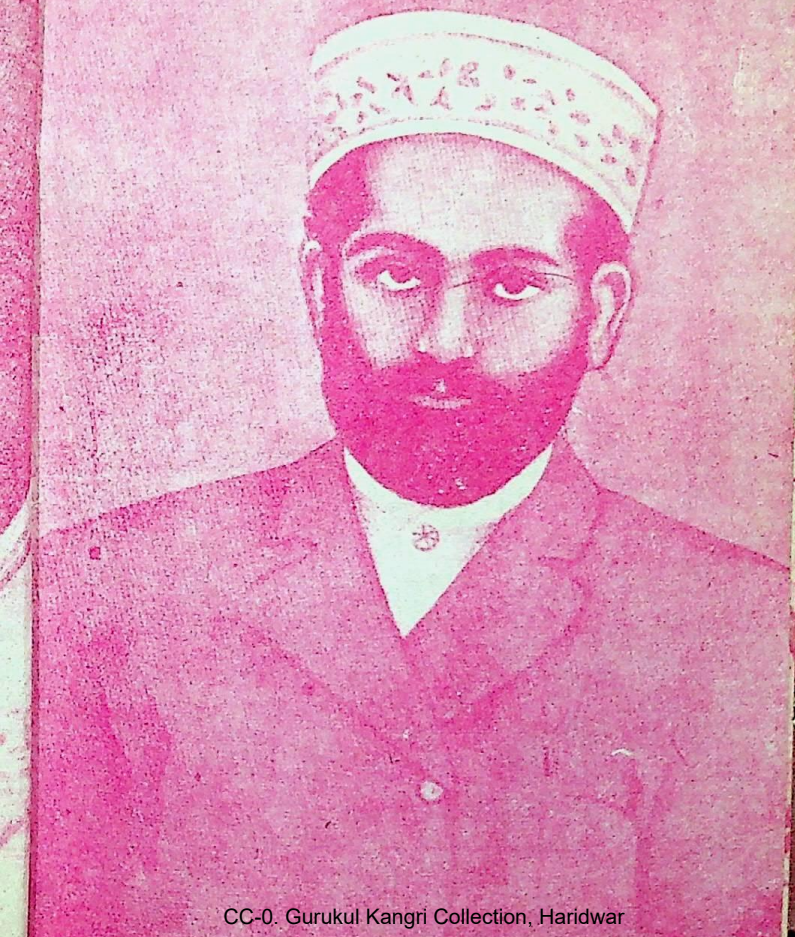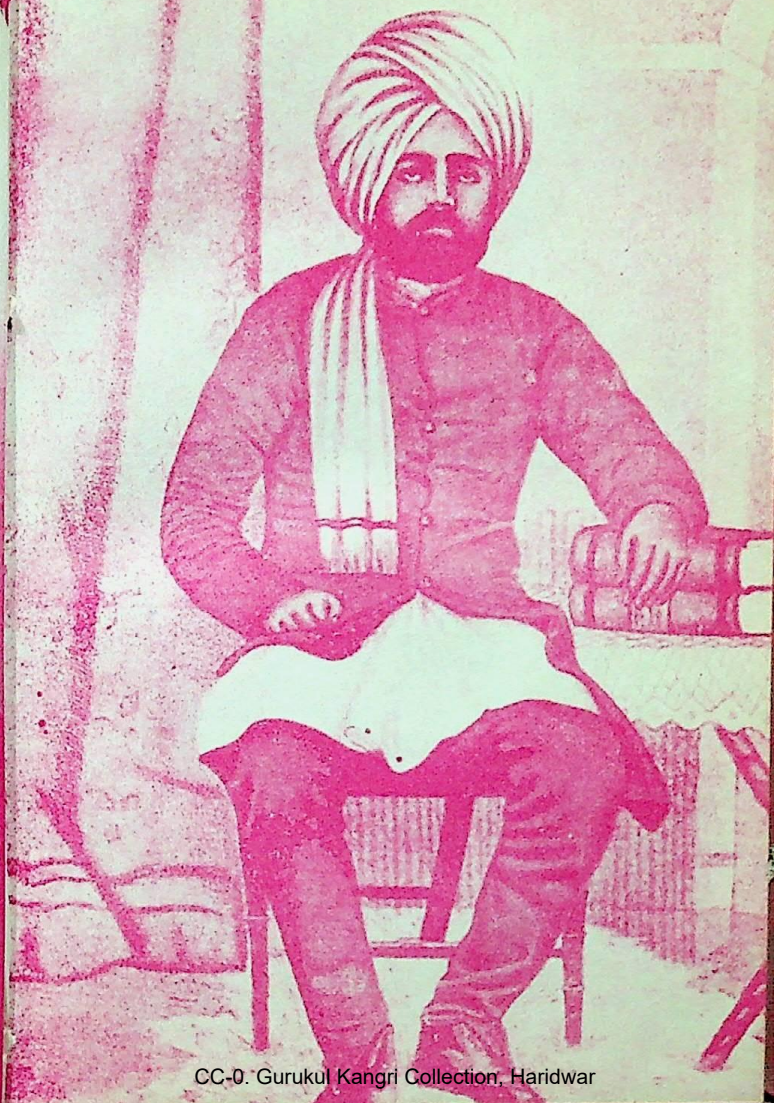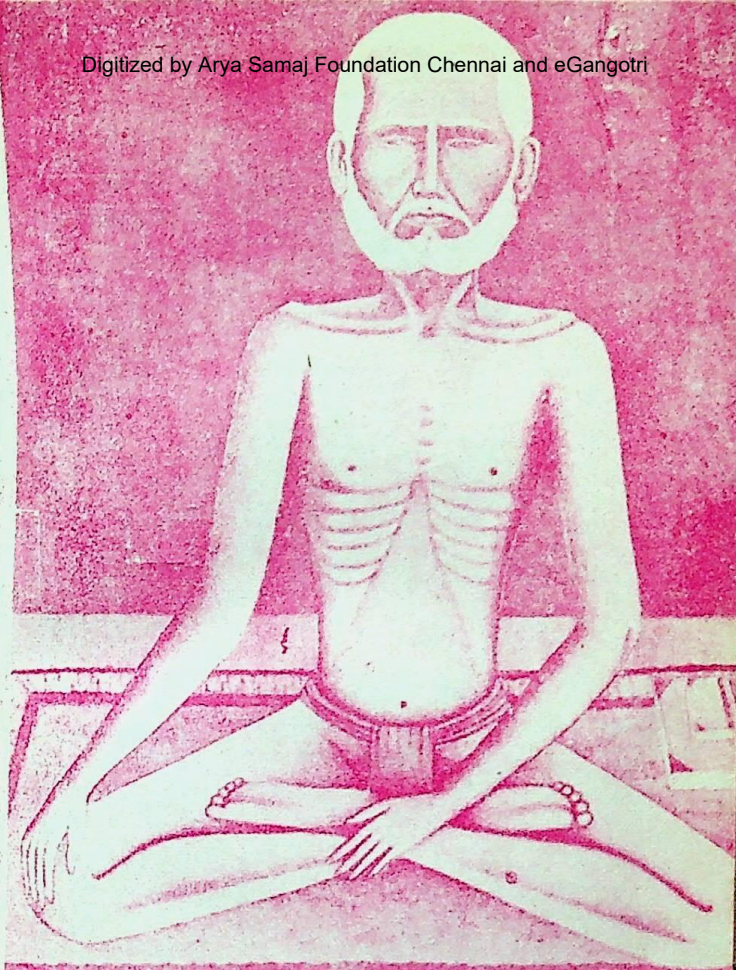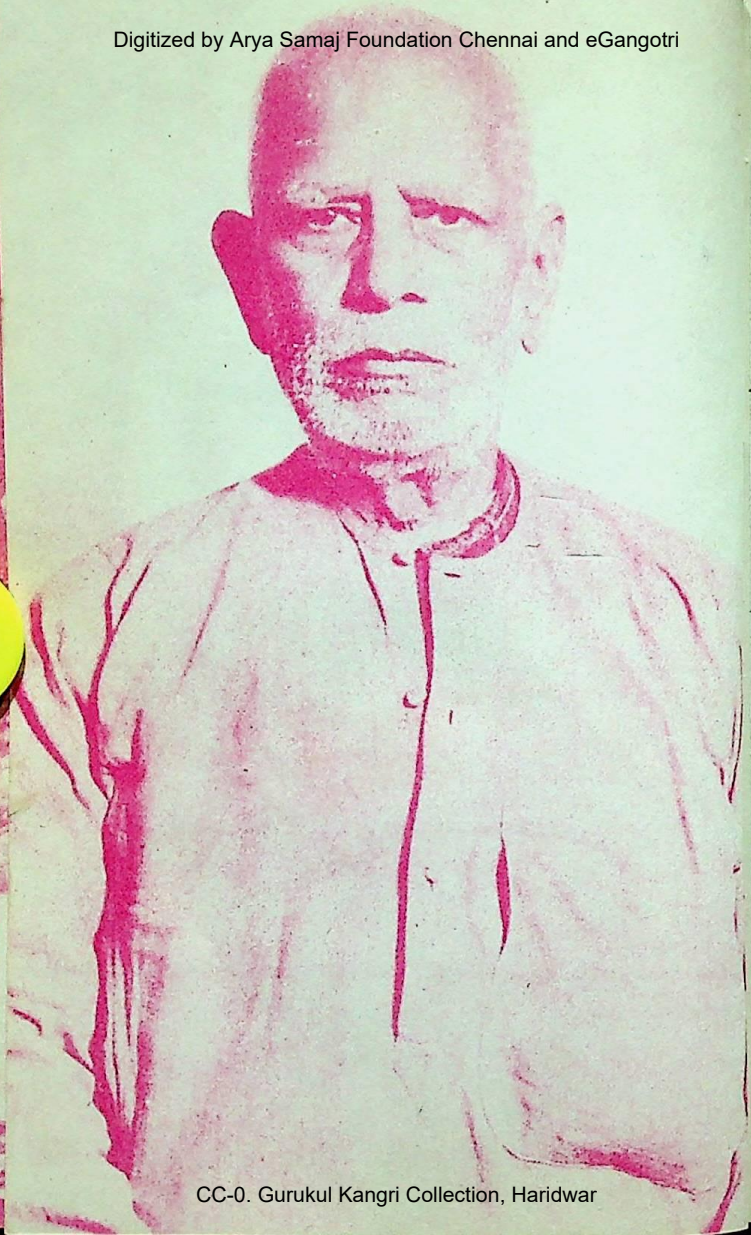
स्व० लाल बहादुर शास्त्री

श्री गुरु विरजानन्द सरस्वती।

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्नातुरम् । ऋ० १.११३.१
इस ग्राम के सभी निवासी नीरोग एवं स्वस्थ हों।

शुक्रवार ३ जनवरी, १९७५

चं० पौष० कृष्ण ६ सौ० २० पौष शक १३ पौष

नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

शनिवार ४ जनवरी, १९७५

चं० पौष कृष्ण ७ सौ० २१ पौष शक १४ पौष

नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते । ऋ० १.११२.६
दानी अमर पद पाते हैं ।

रविवार ५ जनवरी, १९७५

चं० पौष कृष्ण ८ सौ० २२ पौष शक १५ पौष

नक्षत्र चित्रा

सोमवार ६ जनवरी, १९७५

चं० पौष कृष्ण ९ सौ० २३ पौष शक १६ पौष

नक्षत्र स्वाति

मंगलवार ७ जनवरी, १९७५

चं० पौष कृष्ण १० सौ० २४ पौष शक १७ पौष

नक्षत्र विशाखा

बुधवार ८ जनवरी, १९७५

चं० पौष कृष्ण ११ सौ० २५ पौष शक १८ पौष

नक्षत्र अनुराधा

मा न इन्द्र परावृणक् । सा० ३६०

इन्द्र ! हमारा त्याग मत कर ।

बृहस्पतिवार ६ जनवरी, १९७५

चं० पौष कृष्ण १२ सौ० २६ पौष शक १९ पौष

नक्षत्र अनुराधा

शुक्रवार १० जनवरी, १९७५

चं० पौष कृष्ण १३ सौ० २७ पौष शक २० पौष

नक्षत्र ज्येष्ठा

शनिवार ११ जनवरी, १९७५

चं० पौष कृष्ण १४ सौ० २८ पौष शक २१ पौष

नक्षत्र मूल

रविवार १२ जनवरी, १९७५

चं० पौष अमावस्या सौ० २९ पौष शक २२ पौष

नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

देव परिश्रमी के अतिरिक्त किसी की सहायता नहीं करते ।

लोहड़ी : सोमवार १३ जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल १ सौ० १ माघ शक २३ पौष

नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

मकर संक्रान्ति : मंगलवार १४ जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल २ सौ० २ माघ शक २४ पौष

नक्षत्र श्रवण

निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु । ऋ० ५.२.६
निन्दा करने वाले स्वयं निन्दित होते हैं ।

बुधवार १५ जनवरी, १९७५

चं० पौ० शुक्ल ३ सौ० ३ माघ शक २५ पौष

नक्षत्र घनिष्ठा

बृहस्पतिवार १६ जनवरी, १९७५

चं० पौ० शुक्ल ४ सौ० ४ माघ शक २६ पौष

नक्षत्र शतभिषज्

उत्सो देव हिरण्ययः । अथर्व० २०। ११८।८

प्रभो ! तू सम्पत्ति का झरना है ।

शुक्रवार १७ जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल ५ सौ० ५ माघ शक २८ पौष

नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

शनिवार १८ जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल ६ सौ० ६ माघ शक २८ पौष

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

स्वस्ति पन्थामनुचरेम । ऋ० ५.५१.१५
हम सदा कल्याण के मार्ग पर चलें ।

रविवार १९ जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल ७ | सौ० ७ माघ | शक २९ पौष

नक्षत्र रेवती

सोमवार २० जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल ७ | सौ० ८ माघ | शक ३० पौष

नक्षत्र रेवती

मंगलवार २१ जनवरी १९७५

चं० पौष शुक्ल ८ सौ० ९ माघ शक १ माघ

नक्षत्र अश्विनी

बुधवार २२ जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल ९ सौ० १० माघ शक २ माघ

नक्षत्र भरणी

अस्ति रत्नमनागसः । ऋ० ८.६७.७
निष्पाप लोग रत्न प्राप्त करते हैं ।

बृहस्पतिवार २३ जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल १०　　सौ० ११ माघ　　शक ३ माघ

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्मदिन　　नक्षत्र कृतिका

शुक्रवार २४ जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल ११-१२　　सौ० १२ माघ　　शक ४ माघ

नक्षत्र रोहिणी

मज्जन्त्यविचेतसः । ऋ० ६ ६४.२१
अज्ञानी डूब जाते हैं ।

शनिवार २५ जनवरी, १९७५

चं० पौष शुक्ल १३ सौ० १३ माघ शक ५ माघ

नक्षत्र मृगशीर्ष

गणतन्त्र दिवस : रविवार २६ जनवरी १९७५

चं० पौष शुक्ल १४ सौ १४ माघ शक ६ माघ

नक्षत्र आर्द्रा

सत्येनोत्तभिता भूमिः । ऋ० १०.८५.१
भूमि सत्य पर प्रतिष्ठित है ।

सोमवार २७ जनवरी, १९७५
चं० पौष पूर्णिमा सौ० १५ माघ शक ७ माघ
नक्षत्र पुनर्वसु

विवेकानंद जयन्ती : मंगलवार २८ जनवरी, १९७५
चं० माघ कृष्ण १ सौ० १६ माघ शक ८ माघ
नक्षत्र आश्लेषा

न स सखा यो न ददाति सख्ये । ऋ० १०.११७.४
वह मित्र नहीं है जो साथी की सहायता नहीं करता ।

बुधवार २६ जनवरी, १९७५

चं० माघ कृष्ण २ सौ० १७ माघ शक ९ माघ

नक्षत्र मघा

शहीद-दिवस : बृहस्पतिवार ३० जनवरी, १९७५

चं० माघ कृष्ण ३ सौ० १८ माघ शक १० माघ

नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

सं गच्छध्वं संवदध्वम् । ऋ० १०.१९१.२
मिलकर चलो, मिलकर संवाद करो ।

शुक्रवार ३१ जनवरी, १९७५

चं० माघ कृष्ण ४-५ सौ० १९ माघ शक ११ माघ

नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

शनिवार १ फरवरी, १९७५

चं० माघ कृष्ण ६ सौ० २० माघ शक १२ माघ

नक्षत्र हस्त

रविवार २ फरवरी, १९७५

चं० माघ कृष्ण ७ सौ० २१ माघ शक १३ माघ

नक्षत्र चित्रा

सोमवार ३ फरवरी, १९७५

चं० माघ कृष्ण ८ सौ० २२ माघ शक १४ माघ

नक्षत्र स्वाति

अश्मा भवतु नस्तनूः । यजु० २९.४९

हमारे शरीर पत्थर के समान दृढ़ हों ।

मंगलवार ४ फरवरी, १९७५

चं० माघ कृष्ण ९ सौ० २३ माघ शक १५ माघ

नक्षत्र विशाखा

बुधवार ५ फरवरी, १९७५

चं० माघ कृष्ण १० सौ० २४ माघ शक १६ माघ

नक्षत्र अनुराधा

अभूत्यै स्वप्नम् । यजु० १७.३०
सोना विनाश का कारण है ।

शनिवार ८ फरवरी, १९७५
चं० माघ कृष्ण १३ सौ० २७ माघ शक १९ माघ
नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

रविवार ९ फरवरी, १९७५
चं० माघ कृष्ण १४ सौ० २८ माघ शक २० माघ
नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

सोमवार १० फरवरी, १९७५

सं० माघ कृष्ण १४ सौ० २९ माघ शक २१ माघ

नक्षत्र श्रवण

मंगलवार ११ फरवरी, १९७५

सं० माघ अमावस्या सौ० ३० माघ शक २२ माघ

नक्षत्र धनिष्ठा

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । यजु० ३६ १८
मैं सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं ।

बुधवार १२ फरवरी, १९७५

चं० माघ शुक्ल १ सौ० १ फाल्गुन शक २३ माघ

नक्षत्र शतभिषज्

बृहस्पतिवार १३ फरवरी, १९७५

चं० माघ शुक्ल २ सौ० २ फाल्गुन शक २४ माघ

नक्षत्र शतभिषज्

अदीनाः स्याम शरदः शतम् । यजु० ३६.२४
हम सौ वर्ष तक अदीन रहें ।

शुक्रवार १४ फरवरी, १६७५

चं० माघ शुक्ल ३ सौ० ३ फाल्गुन शक २५ माघ

नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

शनिवार १५ फरवरी, १६७५

चं० माघ शुक्ल ४ सौ० ४ फाल्गुन शक २६ माघ

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

मा गृधः । यजु० ४०.१
लालच मत कर।

रविवार १६ फरवरी, १९७५

चं० माघ शुक्ल ५ | सौ० ५ फाल्गुन | शक २७ माघ
सू० उ० ७.१८ | नक्षत्र रेवती | सू० अ० ६.२९

बसन्तपंचमी

सोमवार १७ फरवरी, १९७५

चं० माग शुक्ल ६ | सौ० ६ फाल्गुन | शक २८ माघ

नक्षत्र अश्विनी

मंगलवार १८ फरवरी, १९७५

चं० माघ शुक्ल ७ सौ० ७ फाल्गुन शक २९ माघ

नक्षत्र भरणी

बुधवार १९ फरवरी, १९७५

चं० माघ शुक्ल ८ सौ० ८ फाल्गुन शक ३० माघ

नक्षत्र कृतिका

अग्ने वर्चस्विनं कृणु । अ० ३।२२।३
प्रभो ! मुझे तेजस्वी बना ।

बृहस्पतिवार २० फरवरी, १९७५

चं० माघ शुक्ल ९ सौ० ९ फाल्गुन शक १ फाल्गुन

नक्षत्र रोहिणी

शुक्रवार २१ फरवरी, १९७५

चं० माघ शुक्ल १० सौ० १० फाल्गुन शक २ फाल्गुन

नक्षत्र मृगशीर्ष

यद्यद्यामि यदाभर। अथर्व० २०।११८।२
प्रभो ! जो-जो माँगूं वह-वह प्रदान कर।

शनिवार २२ फरवरी, १९७५
च० माघ शुक्ल ११ सौ० ११ फाल्गुन शक ३ फाल्गुन
नक्षत्र आर्द्रा

रविवार २३ फरवरी, १९७५
चं० माघ शुक्ल १२ सौ० १२ फाल्गुन शक ४ फाल्गुन
नक्षत्र पुनर्वसु

अहं सूर्य इवाजनि । सा० १५१
मैं सूर्य के समान तेजस्वी होऊँ ।

सोमवार २४ फरवरी, १६७५

चं० माघशुक्ल १३ सौ० १३ फाल्गुन शक ५ फाल्गुन

नक्षत्र पुष्प

मंगलवार २५ फरवरी, १६७५

चं० माघ शुक्ल १४ सौ० १४ फाल्गुन शक ६ फाल्गुन

नक्षत्र आश्लेषा

बुधवार २६ फरवरी, १९७५

चं० माघ पूर्णिमा   सौ० १५ फाल्गुन   शक ७ फाल्गुन

नक्षत्र मघा

बृहस्पतिवार २७ फरवरी, १९७५

चं० फाल्गुन कृष्ण १-२   सौ० १६ फाल्गुन   शक ८ फाल्गुन

नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

शुक्रवार २८ फरवरी, १९७५

चं० फाल्गुन कृष्ण ३ सौ० १७ फाल्गुन शक ९ फाल्गुन
नक्षत्र हस्त

शनिवार १ मार्च, १९७५

चं० फाल्गुन कृष्ण ४ सौ० १८ फाल्गुन शक १० फाल्गुन
सू० उ० ७.०६ नक्षत्र चित्रा सू० अ० ६.३६

रविवार २ मार्च, १९७५

चं० फाल्गुन कृष्ण ५ सौ० १९ फाल्गुन शक ११ फाल्गुन
नक्षत्र स्वाति

सोमवार ३ मार्च १९७५

चं० फाल्गुन कृष्ण ६ सौ० २० फाल्गुन शक १२ फाल्गुन
नक्षत्र विशाखा

मंगलवार ४ मार्च, १९७५

चं० फाल्गुन कृष्ण ७ सौ० २१ फाल्गुन शक १३ फाल्गुन

नक्षत्र अनुराधा

बुधवार ५ मार्च, १९७५

चं० फाल्गुन कृष्ण ८ सौ० २२ फाल्गुन शक १४ फाल्गुन

सीता अष्टमी नक्षत्र ज्येष्ठा

इयं दक्षिणा पिन्वते सदा । ऋ० १.१२५.५
दान सदैव सबको तृप्त करता है ।

शनिवार ८ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन कृष्ण ११ सौ० २५ फाल्गुन शक १७ फाल्गुन
नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

रविवार ९ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन कृष्ण १२ सौ २६ फाल्गुन शक १८ फाल्गुन
नक्षत्र श्रवण

सोमवार १० मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन कृष्ण १३ सौ० २७ फाल्गुन शक १९ फाल्गुन
नक्षत्र श्रवण

मंगलवार ११ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन कृष्ण १४ सौ० २८ फाल्गुन शक २० फाल्गुन
महाशिवरात्रि (महर्षि दयानन्द बोधोत्सव) : नक्षत्र धनिष्ठा

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति । ऋ० १.१६४.३९
जो परमात्मा को नहीं जानता उसे वेद से क्या लाभ ?

बुधवार १२ मार्च १९७५
चं० फाल्गुन अमावस्या सौ० २९ फाल्गुन शक २१ फाल्गुन
नक्षत्र शतभिषज्

बृहस्पतिवार १३ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन शुक्ल १ सौ० ३० फाल्गुन शक २२ फाल्गुन
नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

वयं भगवन्तः स्याम। ऋ० १.१६४.४०
हम ऐश्वर्यशाली हों।

शुक्रवार १४ मार्च १९७५
चं० फाल्गुन शुक्ल १ सौ० १ चैत्र शक २३ फाल्गुन
नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

शनिवार १५ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन शुक्ल २ सौ० २ चैत्र शक २४ फाल्गुन
नक्षत्र रेवती

मिनाति श्रियं जरिमा तनूनाम् । ऋ० १.१७९.१
जरा शरीर के सौन्दर्य को नष्ट कर डालती है ।

रविवार १६ मार्च, १९७५

चं० फाल्गुन शुक्ल ३ सौ० ३ चैत्र शक २५ फाल्गुन

लेखराम वीर तृतीय नक्षत्र अश्विनी

सोमवार १७ मार्च, १९७५

चं० फाल्गुन शुक्ल ४ सौ० ४ चैत्र शक २६ फाल्गुन

नक्षत्र भरणी

पुलुकामो हि मर्त्यः। ऋ० १.१७९.५
मनुष्य बहुत कामनाओं वाला है।

मंगलवार १८ मार्च, १९७५

चं० फाल्गुन शुक्ल ५ सौ० ५ चैत्र शक २७ फाल्गुन

नक्षत्र कृतिका

बुधवार १९ मार्च, १९७५

चं० फाल्गुन शुक्ल ६ सौ० ६ चैत्र शक २८ फाल्गुन

नक्षत्र रोहिणी

पुरुद्रुहो हि क्षितयो जनानाम् । ऋ० ३.१८.१
मनुष्यों के शत्रु मनुष्य ही हैं ।

बृहस्पतिवार २० मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन शुक्ल ७ सौ० ७ चैत्र शक २९ फाल्गुन
नक्षत्र मृगशीर्ष

शुक्रवार २१ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन शुक्ल ८ सौ० ८ चैत्र शक ३० फाल्गुन
नक्षत्र आर्द्रा

घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् । ऋ० ३.२६.७
मेरी आँखों में स्नेह और मुख में माधुर्य है ।

शनिवार २२ मार्च, १९७५

च० फाल्गुन ९ शुक्ल　　सौ० ९ चैत्र　　शक १ चैत्र १८९६

नक्षत्र पुनर्वसु

राष्ट्रीय (शक) संवत् १८९६ प्रारम्भ　शहीद भगतसिंह बलिदान दिवस

शनिवार २३ मार्च, १९७५

च० फाल्गुन शुक्ल १०　　सौ० १० चैत्र　　शक २ चैत्र

नक्षत्र पुष्य

जायेदस्तं मघवन् । ऋ० ३.५३.४
हे मघवन् ! वस्तुतः गृहिणी ही घर है।

सोमवार २४ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन ११-१२ शुक्ल सौ० ११ चैत्र शक ३ चैत्र
नक्षत्र आश्लेषा

मंगलवार २५ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन शुक्ल १३ सौ० १२ चैत्र शक ४ चैत्र
नक्षत्र मघा

विदद्वस उभयाहस्त्या भर । ऋ० ५.३९.१
हे धनिक ! दोनों हाथों से दान कर ।

बुधवार २६ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन शुक्ल १४ सौ० १३ चैत्र शक ५ चैत्र
होलिका दहन नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

बृहस्पतिवार २७ मार्च, १९७५
चं० फाल्गुन पूर्णिमा सौ० १४ चैत्र शक ६ चैत्र
रंग पर्व होली नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी

शुक्रवार २८ मार्च, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण १ सौं० १५ चैत्र शक ७ चैत्र

नक्षत्र हस्त

शनिवार २९ मार्च, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण २ सौं० १६ चैत्र शक ८ चैत्र

नक्षत्र चित्रा

रविवार ३० मार्च, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण ३-४ सौ० १७ चैत्र शक ९ चैत्र

नक्षत्र विशाखा

सोमवार ३१ मार्च, १९७५

च० चैत्र कृष्ण ५ सौ० १८ चैत्र शक १० चैत्र

नक्षत्र अनुराधा

गावो भगो गावइन्द्रो मे अच्छात् । ऋ० ६.२८.५
गाय ही मेरा धन है, इन्द्र मुझे गाय प्रदान करे ।

मंगलवार १ अप्रैल, १९७५

च० चैत्र कृष्ण ६ सौ० १९ चैत्र शक ११ चैत्र
नक्षत्र ज्येष्ठा

बुधवार २ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण ७ सौ० २० चैत्र शक १२ चैत्र
नक्षत्र मूल

अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु । ऋ० ६.७४.२

हमारा अन्न अथवा यश मगलमय हो ।

शनिवार ५ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण ९ सौ० २३ चैत्र शक १५ चैत्र

नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

रविवार ६ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण १० सौ० २४ चैत्र शक १६ चैत्र

नक्षत्र श्रवण

विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः । ऋ० ६ ७५.८
हम सदा सुखी एवं शांत मन वाले हों ।

सोमवार ७ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण ११ सौ० २५ चैत्र शक १७ चैत्र

नक्षत्र धनिष्ठा

मंगलवार ८ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण १२ सौ० २६ चैत्र शक १८ चैत्र

नक्षत्र शतभिषज्

बुधवार ९ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण १३ सौ० २७ चैत्र शक १९ चैत्र

पूर्वाभाद्रपदा

बृहस्पतिवार १० अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र कृष्ण १४ सौ० २८ चैत्र शक २० चैत्र

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

अचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः । ऋ० ७.४.७
मूर्ख के मार्ग का अनुसरण नहीं करना चाहिए ।

शुक्रवार ११ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र अमावस्या सौ० २९ चैत्र शक २१ चैत्र

नक्षत्र रेवती

शनिवार १२ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र शुक्ल १. सौ० ३० चैत्र शक २२ चैत्र

नक्षत्र अश्विनी

आर्यसमाज स्थापना-शताब्दि समारोह दिवस

नवसंवत्सर २०३२ आरम्भ, नवरात्र

रविवार १३ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र शुक्ल २ सौ० १ वैशाख शक २३ चैत्र

नक्षत्र भरणी

वैशाखी : जलियाँ वाला बाग दिवस

सोमवार १४ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र शुक्ल ३ सौ० २ वैशाख शक २४ चैत्र

नक्षत्र कृत्तिका

माव्यथिष्ठा । अथर्व० १२.३.२३
व्यथित मत हो ।

मंगलवार १५ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र शुक्ल ४ | सौ० ३ वैशाख | शक २५ चैत्र

नक्षत्र कृत्तिका

बुधवार १६ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र शुक्ल ५ | सौ० ४ वैशाख | शक २६ चैत्र

नक्षत्र रोहिणी

भद्रं मनः कृणुष्व । ऋ० ८.१९.२०
अपने मन को भद्र—उदार बनाओ ।

बृहस्पतिवार १७ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र शुक्ल ६ सौ० ५ वैशाख शक २७ चैत्र
नक्षत्र मृगशिरा

शुक्रवार १८ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र शुक्ल ७ सौ० ६ वैशाख शक २८ चैत्र
नक्षत्र आर्द्रा

उग्रं वचो अपावधीः । सा० ३५३
कठोर वचन त्याग दो ।

शनिवार १९ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र शुक्ल ८ सौ० ७ वैशाख शक २९ चैत्र

नक्षत्र पुनर्वसु

रविवार २० अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र शुक्ल ९ सौ० ८ वैशाख शक ३० चैत्र

नक्षत्र आश्लेषा

मर्यादा पुरुषोत्तम राम जन्म जयन्ती

घृतात् स्वादीयो मधुनश्च वोचत । ऋ० ८.२४.२०
घृत और मधुर से भी मीठा वचन बोलना चाहिए ।

सोमवार २१ अप्रैल, १९७५
चं० चैत्र शुक्ल १०　　सौ० ६ वैशाख　　शक १ वैशाख १८९७
नक्षत्र मघा
राष्ट्रीय (शक) संवत् १८९७ आरम्भ

मंगलवार २२ अप्रैल, १९७५
चं० चैत्र शुक्ल ११　　सौ० १० वैशाख　　शक २ वैशाख
नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

सुगा ऋतस्य पन्थाः । ऋ० ८.३१.१३
सत्य का मार्ग सुगम है ।

बुधवार २३ अप्रैल, १९७५
चं० चैत्र शुक्ल १२ सौ० ११ वैशाख शक ३ वैशाख
नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

बृहस्पतिवार २४ अप्रैल, १९७५
चं० चैत्र शुक्ल १३-१४ सौ० १२ वैशाख शक ४ वैशाख
नक्षत्र हस्त

अधः पश्यस्व मोपरि । ऋ० ८.३३.१७
हे नारि ! नीचे देख ऊपर की ओर नहीं ।

शुक्रवार २५ अप्रैल, १९७५

चं० चैत्र पूर्णिमा सौ० १३ वैशाख शक ५ वैशाख

नक्षत्र चित्रा

शनिवार २६ अप्रल, १९७५

चं० वशाख कृष्ण १ सौ० १४ वैशाख शक ६ वैशाख

नक्षत्र स्वाती

मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः । ऋ० ८.४८.१४
आलस्य और बकवास हम पर शासन न करे ।

रविवार २७ अप्रैल, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण २ सौ० १५ वैशाख शक ७ वैशाख
नक्षत्र विशाखा

सोमवार २८ अप्रैल, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण ३ सौ० १६ वैशाख शक ८ वैशाख
नक्षत्र अनुराधा

मंगलवार २९ अप्रैल, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण ४ सौ० १७ वैशाख शक ९ वैशाख

नक्षत्र ज्येष्ठा

बुधवार ३० अप्रैल, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण ५ सौ० १८ वैशाख शक १० वैशाख

नक्षत्र मूल

दिवमारुहत् तपस्या तपस्वी । अ० १३।२।२५
तपस्वी तप से ऊपर उठता है ।

बृहस्पतिवार १ मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण ६ सौ० १९ वैशाख शक ११ वैशाख
नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

शुक्रवार २ मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण ७ सौ० २० वैशाख शक १२ वैशाख
नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

तवस्माकं तव स्मसि । ऋ० ८.९२.३२
प्रभो ! तुम हमारे हो, और हम तुम्हारे ।

शनिवार ३ मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण ८ सौ० २१ वैशाख शक १३ वैशाख

नक्षत्र उत्तरा श्रवण

रविवार ४ मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण ९ सौ० २२ वैशाख शक १४ वैशाख

नक्षत्र धनिष्ठा

व्रतेषु जागृहि । ६.६१.२४
अपने कर्त्तव्य के प्रति सदा जागृत रहो।

सोमवार ५ मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण १० सौ० २३ वैशाख शक १५ वैशाख

नक्षत्र शतभिषज्

बुद्ध जयन्ती : मंगलवार ६ मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण ११ सौ० २४ वैशाख शक १६ वैशाख

नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

वलंदधान आत्मनि । ऋ० ६।११।३१
अपने आत्मा में बल का आधान करो।

बुधवार ७ मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण ११ सौ० २५ वैशाख शक १७ वैशाख

नक्षत्र उत्तताभाद्रपदा

बृहस्पतिवार ८ मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण १२ सौ० २६ वैशाख शक १८ वैशाख

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

शुक्रवार ९ मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण १३ सौ० २७ वैशाख शक १९ वैशाख

नक्षत्र रेवती

शनिवार १० मई, १९७५

चं० वैशाख कृष्ण १४ सौ० २८ वैशाख शक २० वैशाख

नक्षत्र अश्विनी

रविवार ११ मई, १९७५

चं० वैशाख अमावस्या   सौ० २९ वैशाख   शक २१ वैशाख

नक्षत्र भरणी

सोमवार १२ मई, १९७५

चं० वैशाख शुक्ल १   सौ० ३० वैशाख   शक २२ वैशाख

नक्षत्र कृत्तिका

मंगलवार १३ मई, १९७५

चं० वैशाख शुक्ल २ सौ० ३१ वैशाख शक २३ वैशाख

नक्षत्र रोहिणी

बुधवार १४ मई, १९७५

चं० वैशाख शुक्ल ३ सौ० १ ज्येष्ठ शक २४ वैशाख

नक्षत्र मृगशीर्ष

मा प्रगाम पथो वयम् । ऋ० १०.५७.१
हम सुपथ से कुपथ की ओर न जायँ ।

बृहस्पतिवार १५ मई, १९७५

चं० वैशाख शुक्ल ४ सौ० २ ज्येष्ठ शक २५ वैशाख

नक्षत्र आर्द्रा

शुक्रवार १६ मई, १९७५

चं० वैशाख शुक्ल ५ सौ० ३ ज्येष्ठ शक २६ वैशाख

नक्षत्र पुनर्वसु

शनिवार १७ मई, १९७५

चं० वैशाख शुक्ल ६-७ सौ० ४ ज्येष्ठ शक २७ वैशाख

नक्षत्र पुष्य

रविवार १८ मई, १९७५

चं० वैशाख शुक्ल ८ सौ० ५ ज्येष्ठ शक २८ वैशाख

नक्षत्र आश्लेषा

सोमवार १९ मई, १९७५

चं० वैशाख शुक्ल ९ सौ० ६ ज्येष्ठ शक २९ वैशाख

नक्षत्र मघा

मंगलवार २० मई, १९७५

चं० वैशाख शुक्ल १० सौ० ७ ज्येष्ठ शक ३० वैशाख

नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

ऋतेनादित्यस्तिष्ठति । ऋ० १०.८५.२
सूर्य सत्य से ही ठहरा हुआ है ।

बुधवार २१ मई, १९७५

सं० वैशाख शुक्ल ११ सौ० ८ ज्येष्ठ शक ३१ वैशाख

नक्षत्र हस्त

बृहस्पतिवार २२ मई, १९७५

सं० वैशाख शुक्ल १२ सौ० ९ ज्येष्ठ शक १ ज्येष्ठ

नक्षत्र चित्रा

परा देहि शामुल्यम् । ऋ० १०.८५.२९
हे गृहस्वामिनी ! तुम मलिन वस्त्रों का त्याग करो ।

शुक्रवार २३ मई, १९७५
चं० वैशाख शुक्ल १३ सौ० १० ज्येष्ठ शक २ ज्येष्ठ
नक्षत्र स्वाती

शनिवार २४ मई, १९७५
चं० वैशाख शुक्ल १४ सौ० ११ ज्येष्ठ शक ३ ज्येष्ठ
नक्षत्र विशाखा

परा शृणीहि तपसा यातुधानान् । ऋ० १०.८७.१४
अपने तेज से राक्षसों को मार भगाओ ।

रविवार २५ मई, १९७५

चं० वैशाख पूर्णिमा सौ० १२ ज्येष्ठ शक ४ ज्येष्ठ

नक्षत्र अनुराधा

सोमवार २६ मई, १९७५

चं० ज्येष्ठ कृष्ण १ सौ० १३ ज्येष्ठ शक ५ ज्येष्ठ

नक्षत्र ज्येष्ठा

वाचः सत्यमशीय । यजु० ३९।४
वाणी से मैं सत्य बोलूं ।

मंगलवार २७ मई, १९७५

चं० ज्येष्ठ कृष्ण २ सौ० १४ ज्येष्ठ शक ६ ज्येष्ठ

नक्षत्र मूल

बुधवार २८ मई, १९७५

चं० ज्येष्ठ कृष्ण ३ सौ० १५ ज्येष्ठ शक ७ ज्येष्ठ

नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

श्रद्धया विन्दते वसु । ऋ० १०.१५१.४
श्रद्धा से ऐश्वर्य प्राप्त होता है ।

सोमवार २ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ कृष्ण ८ | सौ० २० ज्येष्ठ | शक १२ ज्येष्ठ

नक्षत्र शतभिषज्

मंगलवार ३ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ कृष्ण ९ | सौ० २१ ज्येष्ठ | शक १३ ज्येष्ठ

नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

अपसेधत दुर्मतिम् । ऋ० १०.१७५.२
दुर्बुद्धि को दूर हटाओ ।

बुधवार ४ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ कृष्ण १०　　सौ० २२ ज्येष्ठ　　शक १४ ज्येष्ठ

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

बृहस्पतिवार ५ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ कृष्ण ११　　सौ० २३ ज्येष्ठ　　शक १५ ज्येष्ठ

नक्षत्र रेवती

शुक्रवार ६ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ कृष्ण १२ सौ० २४ ज्येष्ठ शक १६ ज्येष्ठ

नक्षत्र अश्विनी

शनिवार ७ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ कृष्ण १३ सौ० २५ ज्येष्ठ शक १७ ज्येष्ठ

नक्षत्र भरणी

सत्या नः सन्त्वाशिषः। यजु० २.१०
हमारे आशीर्वचन सत्य हों।

रविवार ८ जून, १९७५

चं०ज्येष्ठ कृष्ण १४ सौ० २६ ज्येष्ठ शक १८ ज्येष्ठ

नक्षत्र कृत्तिका

सोमवार ९ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ अमावस्या सौ० २७ ज्येष्ठ शक १९ ज्येष्ठ

नक्षत्र रोहिणी

इयं ते यज्ञिया तनूः । यजु० ४.१३
तेरा यह शरीर प्रभु-दर्शन के लिए है ।

मंगलवार १० जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ शुक्ल १ सौ० २८ ज्येष्ठ शक २० ज्येष्ठ

नक्षत्र मृगशीर्ष

बुधवार ११ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ शुक्ल २ सौ० २९ ज्येष्ठ शक २१ ज्येष्ठ

नक्षत्र आर्द्रा

मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्वम् । यजु० ५०.३४
मुझे मित्र की दृष्टि से देखो ।

बृहस्पतिवार १२ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ शुक्ल ३ सौ० ३० ज्येष्ठ शक २२ ज्येष्ठ

नक्षत्र पुनर्वसु

शुक्रवार १३ जून, १९७५

च० ज्येष्ठ शुक्ल ४ सौ० ३१ ज्येष्ठ शक २३ ज्येष्ठ

नक्षत्र पुष्य

मा भेर्मा संविक्था: ऊर्जं धत्स्व । यजु० ६.३५
मत डर, मत घबरा, धैर्य धारण कर।

शनिवार १४ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ शुक्ल ५ सौ० १ आषाढ़ शक २४ ज्येष्ठ

नक्षत्र आश्लेषा

रविवार १५ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ शुक्ल ६ सौ० २ आषाढ़ शक २५ ज्येष्ठ

नक्षत्र मघा

नमो मात्रे पृथिव्यै । यजु० ९ २२
पृथिवी माता को नमस्कार हो ।

सोमवार १६ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ शुक्ल ७ सौ० ३ आषाढ शक २६ ज्येष्ठ

नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

मंगलवार १७ जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ शुक्ल ८-९ सौ० ४ आषाढ शक २७ ज्येष्ठ

नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

मा पुरा जरसो मृथाः । अथर्व० ५।३०।१३
बुढ़ापे से पूर्व मत मर ।

शुक्रवार २० जून, १९७५

चं० ज्येष्ठ शुक्ल १२ सौ० ७ आषाढ़ शक ३० ज्येष्ठ

नक्षत्र स्वाती

शनिवार २१ जून १९७५

चं० ज्येष्ठ शुक्ल १३ सौ० ८ आषाढ़ शक ३१ ज्येष्ठ

नक्षत्र विशाखा

मा हिंसीस्तन्वा प्रजाः । यजु० १२.३२
अपने शरीर से किसी को भी पीड़ित न कर ।

रविवार २२ जून, १९७५

सं० ज्येष्ठ शुक्ल १४ सौ० ९ आषाढ शक १ आषाढ़

नक्षत्र अनुराधा

सोमवार २३ जून, १९७५

सं० ज्येष्ठ पूर्णिमा सौ० १० आषाढ़ शक २ आषाढ

नक्षत्र ज्येष्ठा

लोकं पृण छिद्रं पृण । यजु० १२.५४
तुम विश्व को पूर्ण करो, छिद्रों को भर दो ।

मंगलवार २४ जून, १६७५

चं० आषाढ़ कृष्ण १ सौ० ११ आषाढ़ शक ३ आषाढ़

नक्षत्र मूल

बुधवार २५ जून, १६७५

चं० आषाढ़ कृष्ण २ सौ० १२ आषाढ़ शक ४ आषाढ़

नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

बृहस्पतिवार २६ जून, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण ३ | सौ० १३ आषाढ़ | शक ५ आषाढ़

नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

शुक्रवार २७ जून, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण ४ | सौ० १४ आषाढ़ | शक ६ आषाढ़

नक्षत्र श्रवण

दुरितानि परासुव । यजु० ३०।३
दोषों को दूर कर ।

शनिवार २८ जून, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण ५ सौ० १५ आषाढ़ शक ७ आषाढ़
नक्षत्र धनिष्ठा

रविवार २९ जून, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण ६ सौ० १६ आषाढ़ शक ८ आषाढ़
नक्षत्र शतभिषज्

प्रेता जयता नर । यजु० १७.४६
हे वीर पुरुषो ! दृढ़ता के साथ आगे बढ़ो ।

सोमवार ३० जून, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण ६ सौ० १७ आषाढ़ शक ९ आषाढ़

नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

मंगलवार १ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण ७ सौ० १८ आषाढ़ शक १० आषाढ़

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

तेजोऽसि तेजोमयि धेहि । यजु० १९.९.
प्रभो ! आप तेज स्वरूप हो । मुझे तेज प्रदान करो ।

बुधवार २ जौलाई, १९७५
चं० आषाढ कृष्ण ८ सौ० १९ आषाढ़ शक ११ आषाढ़
नक्षत्र रेवती

बृहस्पतिवार ३ जौलाई, १९७५
चं० आषाढ़ कृष्ण ९ सौ० २० आषाढ़ शक १२ आषाढ़
नक्षत्र अश्विनी

पशुभिः पशूनाप्नोति । यजु० १९.२०
पशुता के विचारों से पशुत्व प्राप्त होता है ।

शुक्रवार ४ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण १०   सौ० २१ आषाढ़   शक १३ आषाढ़

नक्षत्र भरणी

शनिवार ५ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण ११   सौ० २२ आषाढ़   शक १४ आषाढ़

नक्षत्र कृत्तिका

आरे बाधस्व दुच्छुनाम् । यजु० १९.३८
दुर्जन रूपी दुष्ट कुत्तों को दूर भगाओ ।

रविवार ६ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण १२ सौ० २३ आषाढ़ शक १५ आषाढ़

नक्षत्र कृत्तिका

सोमवार ७ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ कृष्ण १३ सौ० २४ आषाढ़ शक १६ आषाढ़

नक्षत्र रोहिणी

शिरो मे श्रीर्य शोमुखम् । यजु० २०.५
मेरा शिर श्री सम्पन्न हो, मेरा मुख यशस्वी हो ।

बृहस्पतिवार १० जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ शुक्ल १-२ सौ० २७ आषाढ़ शक १९ आषाढ़
नक्षत्र पुष्य

शुक्रवार ११ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ शुक्ल ३ सौ० २८ आषाढ़ शक २० आषाढ़
नक्षत्र आश्लेषा

जिह्वा मे भद्रम् । यजु० २०.६
मेरी जिह्वा कल्याणमयी हो।

शनिवार १२ जौलाई, १६७५
सं० आषाढ़ शुक्ल ४ सौ० २६ आषाढ़ शक २१ आषाढ़
नक्षत्र मघा

रविवार १३ जौलाई, १६७५
सं० आषाढ़ शुक्ल ५ सौ० ३० आषाढ़ शक २२ आषाढ़
नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

मांस···नाश्नीयात्। अथर्व० ९।६।३९

मांस नहीं खाना चाहिए।

शुक्रवार १८ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ शुक्ल १० सौ० ३ श्रावण शक २७ आषाढ़

नक्षत्र विशाखा

शनिवार १९ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ शुक्ल ११ सौ० ४ श्रावण शक २८ आषाढ़

नक्षत्र अनुराधा

जिह्वा मे भद्रम् । यजु० २०.६
मेरी जिह्वा कल्याणमयी हो।

शनिवार १२ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ शुक्ल ४ सौ० २९ आषाढ़ शक २१ आषाढ़
नक्षत्र मघा

रविवार १३ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ शुक्ल ५ सौ० ३० आषाढ़ शक २२ आषाढ़
नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

मांसं···नाश्नीयात् । अथर्व० ६।६।३६
मांस नहीं खाना चाहिए ।

शुक्रवार १८ जौलाई, १६७५

चं० आषाढ़ शुक्ल १० सौ० ३ श्रावण शक २७ आषाढ़
नक्षत्र विशाखा

शनिवार १६ जौलाई, १६७५

चं० आषाढ़ शुक्ल ११ सौ० ४ श्रावण शक २८ आषाढ़
नक्षत्र अनुराधा

ज्योतिषा बाधते तमः । यजु० ३३.९२
ज्योति से अन्धकार नष्ट होता है ।

शनिवार २६ जौलाई. १९७५

चं० श्रावण कृष्ण ३ | सौ० ११ श्रावण | शक ४ श्रावण

नक्षत्र शतभिषज्

रविवार २७ जौलाई, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण ४ | सौ० १२ श्रावण | शक ५ श्रावण

नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

धर्माय सभाचरम् । यजु० ३०.६
सभासद धर्म के लिए चुना जाता है ।

रविवार २० जौलाई, १९७५

च० आषाढ़ शुक्ल १२ सौ० ५ श्रावण शक २९ आषाढ़

नक्षत्र ज्येष्ठा

सोमवार २१ जौलाई, १९७५

चं० आषाढ़ शुक्ल १३ सौ० ६ श्रावण शक ३० आषाढ़

नक्षत्र मूल

शनिवार २६ जौलाई, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण ३ सौ० ११ श्रावण शक ४ श्रावण

नक्षत्र शतभिषज्

रविवार २७ जौलाई, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण ४ सौ० १२ श्रावण शक ५ श्रावण

नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

दृते दृꣳह मा । यजु० ३६.१८
हे देव ! मुझे शुभ कर्म में दृढ़ कर ।

सोमवार २८ जौलाई, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण ५ सौ० १३ श्रावण शक ६ श्रावण
नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

मंगलवार २९ जौलाई, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण ६ सौ० १४ श्रावण शक ७ श्रावण
नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

अव ब्रह्म द्विषो जहि । सा० १६४
वेद, परमात्मा और ज्ञान से द्वेष करने वालों को त्याग दो।

रविवार ३ अगस्त, १६७५

चं० श्रावण कृष्ण ११ सौ० १६ श्रावण शक १२ श्रावण

नक्षत्र रोहिणी

सोमवार ४ अगस्त, १६७५

चं० श्रावण कृष्ण १२ सौ० २० श्रावण शक १३ श्रावण

नक्षत्र मृगशीर्ष

दृते दृँह मा । यजु० ३६.१८
हे देव ! मुझे शुभ कर्म में दृढ़ कर।

सोमवार २८ जौलाई, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण ५ सौ० १३ श्रावण शक ६ श्रावण

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

मंगलवार २९ जौलाई, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण ६ सौ० १४ श्रावण शक ७ श्रावण

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

अव ब्रह्म द्विषो जहि । सा० १९४
वेद, परमात्मा और ज्ञान से द्वेष करने वालों को त्याग दो।

रविवार ३ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण ११ सौ० १९ श्रावण शक १२ श्रावण

नक्षत्र रोहिणी

सोमवार ४ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण १२ सौ० २० श्रावण शक १३ श्रावण

नक्षत्र मृगशीर्ष

मंगलवार ५ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण १३ सौ० २१ श्रावण शक १४ श्रावण

नक्षत्र आर्द्रा

बुधवार ६ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण १४ सौ० २२ श्रावण शक १५ श्रावण

नक्षत्र पुनर्वसु

मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचम् । सा० ८।१०
मैं कभी निन्द्य वचन न बोलूं ।

सोमवार ११ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल ५ सौ० २७ श्रावण शक २० श्रावण
नक्षत्र हस्त

मंगलवार १२ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल ६ सौ० २८ श्रावण शक २१ श्रावण
नक्षत्र चित्रा

[illegible] यथा त्वम् । [illegible]

हे भगवन् ! जैसा तू है, ऐसा अन्य कोई नहीं ।

मंगलवार ५ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण १३ सौ० २१ श्रावण शक १४ श्रावण

नक्षत्र आर्द्रा

बुधवार ६ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण कृष्ण १४ सौ० २२ श्रावण शक १५ श्रावण

नक्षत्र पुनर्वसु

मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचम् । सा० ६१०

मैं कभी निन्द्य वचन न बोलूं ।

सोमवार ११ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल ५ सौ० २७ श्रावण शक २० श्रावण

नक्षत्र हस्त

मंगलवार १२ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल ६ सौ० २८ श्रावण शक २१ श्रावण

नक्षत्र चित्रा

बुधवार १३ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल ७ सौ० २९ श्रावण शक २२ श्रावण

नक्षत्र स्वाती

बृहस्पतिवार १४ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल ८ सौ० ३० श्रावण शक २३ श्रावण

नक्षत्र विशाखा

ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियम् । सा० ७.१०
सत्य भाषी की जिह्वा से मधुरस झरता है ।

शुक्रवार १५ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल ९ सौ० १ भाद्रपद शक २४ श्रावण

नक्षत्र अनुराधा

स्वतन्त्रता दिवस

शनिवार १६ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल १० सौ० २ भाद्रपद शक २५ श्रावण

नक्षत्र ज्येष्ठा

रविवार १७ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल ११ सौ० ३ भाद्रपद शक २६ श्रावण

नक्षत्र मूल

सोमवार १८ अगस्त, १९७५

चं० श्रावण शुक्ल १२ सौ० ४ भाद्रपद शक २७ श्रावण

नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

सं श्रुतेन गमेमहि । अथर्व० १.१.४
हम सुने हुए वेद ज्ञान के अनुसार आचरण करें ।

मंगलवार १९ अगस्त, १९७५
चं० श्रावण शुक्ल १३ सौ० ५ भाद्रपद शक २८ श्रावण
नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

बुधवार २० अगस्त, १९७५
चं० श्रावण शुक्ल १४ सौ० ६ भाद्रपद शक २९ श्रावण
नक्षत्र श्रवण

यदुवक्थानृतं जिह्वया वृजिन बहु । अ० १. १०. ३
जिह्वा से असत्य वचन बोलना बहुत बड़ा पाप है ।

बृहस्पतिवार २१ अगस्त, १९७५
चं० श्रावण पूर्णिमा   सौ० ७ भाद्रपद   शक ३० श्रावण
नक्षत्र धनिष्ठा
रक्षाबन्धन, श्रावणी उपाकर्म, हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस

शुक्रवार २२ अगस्त, १९७५
चं० भाद्रपद कृष्ण १   सौ० ८ भाद्रपद   शक ३१ श्रावण
नक्षत्र शतभिषज्

शनिवार २३ अगस्त, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण २ सौ० ९ भाद्रपद शक १ भाद्रपद

नक्षत्र शतभिषज्

रविवार २४ अगस्त, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण ३ सौ० १० भाद्रपद शक २ भाद्रपद

नक्षत्र पूर्वभाद्रपदा

यदग्निरापो अदहत् । अ० १. २५. १
क्रोधरूपी अग्नि जीवन रस को जला देती है ।

सोमवार २५ अगस्त, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण ३ सौ० ११ भाद्रपद शक ३ भाद्रपद

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

मंगलवार २६ अगस्त, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण ४ सौ० १२ भाद्रपद शक ४ भाद्रपद

नक्षत्र रेवती

जिह्वाया अग्रे मधु मे । अ० १. ३४. २
मेरी जिह्वा के अग्र भाग में मधुरता रहे ।

बुधवार २७ अगस्त, १९७५
चं० भाद्रपद कृष्ण ५ सौ० १३ भाद्रपद शक ५ भाद्रपद
नक्षत्र अश्विनी

बृहस्पतिवार २८ अगस्त १९७५
चं० भाद्रपद कृष्ण ६ सौ० १४ भाद्रपद शक ६ भाद्रपद
नक्षत्र भरणी

शुक्रवार २९ अगस्त, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण ७ सौ० १५ भाद्रपद शक ७ भाद्रपद

नक्षत्र कृत्तिका

शनिवार ३० अगस्त, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण ८ सौ० १६ भाद्रपद शक ८ भाद्रपद

नक्षत्र रोहिणी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

शप्तारमेतु शपथः । अ० २. ७. ५
गाली, गाली देने वाले को लौट जाती है ।

रविवार ३१ अगस्त, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण ९ सौ० १७ भाद्रपद शक ९ भाद्रपद

नक्षत्र मृगशीर्ष

सोमवार १ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण १० सौ० १८ भाद्रपद शक १० भाद्रपद

नक्षत्र आर्द्रा

मंगलवार २ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण ११ सौ० १९ भाद्रपद शक ११ भाद्रपद

नक्षत्र पुनर्वसु

बुधवार ३ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण १२ सौ० २० भाद्रपद शक १२ भाद्रपद

नक्षत्र पुष्य

बृहस्पतिवार ४ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद कृष्ण १३-१४ सौ० २१ भाद्रपद शक १३ भाद्रपद

नक्षत्र आश्लेषा

शुक्रवार ५ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद अमावस्या सौ० २२ भाद्रपद शक १४ भाद्रपद

नक्षत्र मघा

सहस्रहस्त सं किर । अ० ३. २४. ५
हजारों हाथों से दान कर ।

शनिवार ६ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद शुक्ल १ सौ० २३ भाद्रपद शक १५ भाद्रपद

नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

रविवार ७ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद शुक्ल २ सौ० २४ भाद्रपद शक १६ भाद्रपद

नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

सोमवार ८ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद शुक्ल ३ सौ० २५ भाद्रपद शक १७ भाद्रपद

नक्षत्र हस्त

मंगलवार ९ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद शुक्ल ४ सौ० २६ भाद्रपद शक १८ भाद्रपद

नक्षत्र स्वाती

अनुव्रतः पितुः पुत्रः । अ० ३. ३०. २
पुत्र अपने पिता के अनुकूल आचरण करे ।

बुधवार १० सितम्बर, १९७५
चं० भाद्रपद शुक्ल ५-६ सौ० २७ भाद्रपद शक १९ भाद्रपद
नक्षत्र विशाखा

बृहस्पतिवार ११ सितम्बर, १९७५
चं० भाद्रपद शुक्ल ७ सौ० २८ भाद्रपद शक २० भाद्रपद
नक्षत्र अनुराधा

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षत् । अ० ३.३०.३
भाई भाई से द्वेष न करे ।

शुक्रवार १२ सितम्बर, १६७५
च० भाद्रपद शुक्ल ८ सौ० २६ भाद्रपद शक २१ भाद्रपद
नक्षत्र ज्येष्ठा

शनिवार १३ सितम्बर, १६७५
च० भाद्रपद शुक्ल ६ सौ० ३० भाद्रपद शक २२ भाद्रपद
नक्षत्र मूल

समानी प्रपा । अ० ३.३०.६

तुम सबका जल पीने का स्थान एक हो ।

रविवार १४ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद शुक्ल १०   सौ० ३१ भाद्रपद   शक २३ भाद्रपद

नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

सोमवार १५ सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद शुक्ल १०   सौ० ३२ भाद्रपद   शक २४ भाद्रपद

नक्षत्र, उत्तराषाढ़ा

रोहान् रुरुहुर्मेध्यासः । अ० ४.१४.१
पवित्र-आत्मा ही उच्च स्थानों को प्राप्त होते हैं ।

मंगलवार १६ सितम्बर, १९७५
चं० भाद्रपद शुक्ल ११ सौ० १ आश्विन शक २५ भाद्रपद
नक्षत्र श्रवण

बुधवार १७ सितम्बर, १९७५
चं० भाद्रपद शुक्ल १२ सौ० २ आश्विन शक २६ भाद्रपद
नक्षत्र श्रवण

रणे रणे अनुमदन्ति विप्राः । अ० ५.२.४
ज्ञानी प्रत्येक संघर्ष में प्रसन्न रहते हैं ।

बृहस्पतिवार १८ सितम्बर, १९७५
चं० भाद्रपद शुक्ल १३   सौ० ३ आश्विन   शक २७ भाद्रपद
नक्षत्र घनिष्ठा

शुक्रवार १९ सितम्बर, १९७५
चं० भाद्रपद शुक्ल १४   सौ० ४ आश्विन   शक २८ भाद्रपद
नक्षत्र शतभिषज्

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु । अ० ५.३.१
हे देव ! मेरा तेज संघर्षों में सदा प्रकाशमान रहे ।

शनिवार २० सितम्बर, १९७५

चं० भाद्रपद पूर्णिमा सौ० ५ आश्विन शक २९ भाद्रपद
नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

रविवार २१ सितम्बर, १९७५

चं० आश्विन कृष्ण १ सौ० ६ आश्विन शक ३० भाद्रपद
नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

सोमवार २२ सितम्बर, १९७५

चं० आश्विन कृष्ण २ सौ० ७ आश्विन शक ३१ भाद्रपद

नक्षत्र रेवती

मंगलवार २३ सितम्बर, १९७५

चं० आश्विन कृष्ण ३ सौ० ८ आश्विन शक १ आश्विन

नक्षत्र अश्विनी

बुधवार २४ सितम्बर, १९७५

चं० आश्विन कृष्ण ४ सौ० ६ आश्विन शक २ आश्विन

नक्षत्र भरणी

बृहस्पतिवार २५ सितम्बर, १९७५

चं० आश्विन कृष्ण ५ सौ० १० आश्विन शक ३ आश्विन

नक्षत्र कृत्तिका

परोऽपेहि मनस्पाप । अ० ६.४५.१
ओ पापी विचार ! परे हट, दूर भाग ।

शुक्रवार २६ सितम्बर, १९७५
चं० आश्विन कृष्ण ६ सौ० ११ आश्विन शक ४ आश्विन
नक्षत्र रोहिणी

शनिवार २७ सितम्बर, १९७५
चं० आश्विन कृष्ण ७ सौ० १२ आश्विन शक ५ आश्विन
नक्षत्र रोहिणी

अनृणा अस्मिन्नृणाः परस्मिन् । अ० ६.११७.३
हम लोक-परलोक दोनों में ऋण रहित हों ।

रविवार २८ सितम्बर, १९७५
चं० आश्विन कृष्ण ८ सौ० १३ आश्विन शक ६ आश्विन
नक्षत्र मृगशीर्ष

सोमवार २९ सितम्बर, १९७५
चं० आश्विन कृष्ण ९ सौ० १४ आश्विन शक ७ आश्विन
नक्षत्र आर्द्रा

गातुवित्त्वा गातुमित । अ० ७.६७.७
पहले मार्ग को जानो फिर उस पर चलो ।

बृहस्पतिवार २ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन कृष्ण १२ सौ० १७ आश्विन शक १० आश्विन
नक्षत्र मघा
गांधी जयन्ती, शास्त्री जन्म दिवस

शुक्रवार ३ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन कृष्ण १३ सौ० १८ आश्विन शक ११ आश्विन
नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

शनिवार ४ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन कृष्ण १४ सौ० १९ आश्विन शक १२ आश्विन
नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

रविवार ५ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल १ सौ० २० आश्विन शक १३ आश्विन
नक्षत्र हस्त
नवरात्र आरम्भ

अपतेतः पापि लक्ष्मि नश्येतः । अ० ७.११५.१
पापि लक्ष्मि ! तू मेरे यहाँ से दूर चली जा।

सोमवार ६ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल २ सौ० २१ आश्विन शक १४ आश्विन
नक्षत्र चित्रा

मंगलवार ७ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल ३ सौ० २२ आश्विन शक १५ आश्विन
नक्षत्र स्वाती

उत्क्रामः पुरुषः मावपत्था । अ० ८.१.४
हे मनुष्य ! तू ऊपर उठ, नीचे मत गिर ।

बुधवार ८ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल ४ सौ० २३ आश्विन शक १६ आश्विन
नक्षत्र विशाखा

बृहस्पतिवार ९ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल ५ सौ० २४ आश्विन शक १७ आश्विन
नक्षत्र अनुराधा
गुरु विरजानन्द निर्वाण दिवस

उद्यानं ते पुरुष नावयानम् । अ० ८.१.६
हे पुरुष ! तेरी उन्नति हो, अवनति नहीं ।

शुक्रवार १० अक्टूबर, १९७५
० आश्विन शुक्ल ६ सौ० २५ आश्विन शक १८ आश्विन
नक्षत्र ज्येष्ठा

शनिवार ११ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल ७ सौ० २६ आश्विन शक १९ आश्विन
नक्षत्र मूल

मा जीवेभ्याः प्रमदः । अ० ८.१.७
अन्य प्राणियों के प्रति प्रमाद न कर ।

रविवार १२ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल ८ सौ० २७ आश्विन शक २० आश्विन
नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

सोमवार १३ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल ९ सौ० २८ आश्विन शक २१ आश्विन
नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

आ रोह तमसो ज्योतिः । अ० ८.१.८
अन्धकार से निकल कर प्रकाश की ओर चल ।

मंगलवार १४ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल १०   सौ० २९ आश्विन   शक २२ आश्विन
नक्षत्र श्रवण

विजयादशमी

बुधवार १५ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल ११   सौ० ३० आश्विन   शक २३ आश्विन
नक्षत्र घनिष्ठा

दुष्कृते मा सुगं भूद् । अ० ८.४.७

दुराचारी इधर-उधर सुख से नहीं घूम सकते ।

बृहस्पतिवार १६ अक्टूबर, १९७५

चं० आश्विन शुक्ल १२ सौ० ३१ आश्विन शक २४ आश्विन

नक्षत्र शतभिषज्

शुक्रवार १७ अक्टबर, १९७५

चं० आश्विन शुक्ल १३ सौ० १ कार्तिक शक २५ आश्विन

नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

अशितावत्यतिथावश्नीयात् । अ० ६.६. (८) ३८
अतिथि को खिलाकर फिर भोजन करना चाहिए ।

शनिबार १८ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल १३ सौ० २ कार्तिक शक २६ आश्विन
नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

रविवार १९ अक्टूबर, १९७५
चं० आश्विन शुक्ल १४ सौ० ३ कार्तिक शक २७ आश्विन
नक्षत्र रेवती

सोमवार २० अक्टूबर, १९७५

चं० आश्विन पूर्णिमा सौ० ४ कार्तिक शक २८ आश्विन

नक्षत्र अश्विनी

मंगलवार २१ अक्टूबर, १९७५

चं० कार्तिक कृष्ण १ सौ० ५ कार्तिक शक २९ आश्विन

नक्षत्र अश्विनी

मा नो द्विक्षत् कश्चन । अ० १२.१.२३
संसार में कोई भी मुझसे द्वेष न करें।

बुधवार २२ अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण २ सौ० ६ कार्तिक शक ३० आश्विन
नक्षत्र भरणी

बृहस्पतिवार २३ अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण ३ सौ० ७ कार्तिक शक १ कार्तिक
नक्षत्र कृत्तिका

अमो अहमस्मि सा त्वम् । अ० १४.२.७१
मैं (पति) विष्णु हूँ और तू (पत्नी) लक्ष्मी है ।

शुक्रवार २४ अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण ४ सौ० ८ कार्तिक शक २ कार्तिक
नक्षत्र रोहिणी

शनिवार २५ अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण ५ सौ० ९ कार्तिक शक ३ कार्तिक
नक्षत्र मृगशीर्ष

असन्तापं मे हृदयम् । अ० १६.३.६
मेरा हृदय सदा सन्ताप रहित रहे ।

रविवार २६ अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण ६ सौ० १० कार्तिक शक ४ कार्तिक
नक्षत्र आर्द्रा

सोमवार २७ अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण ७ सौ० ११ कार्तिक शक ५ कार्तिक
नक्षत्र पुनर्वसु

प्रियः प्रजानां भूयासम् । अ० १७.१.५
मैं जनता का प्रिय होऊँ ।

मंगलवार २८ अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण ८ सौ० १२ कार्तिक शक ६ कार्तिक
नक्षत्र पुष्यः

बुधवार २९ अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण ९ सौ० १३ कार्तिक शक ७ कार्तिक
नक्षत्र आश्लेषा

परैतु मृत्युरमृतं न ऐतु । अ० १८.३.६२
मृत्यु हमसे दूर भाग जाए अमरता हमारे पास आए ।

बृहस्पतिवार ३० अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण १० सौ० १४ कार्तिक शक ८ कार्तिक
नक्षत्र मघा

शुक्रवार ३१ अक्टूबर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण ११-१२ सौ० १५ कार्तिक शक ९ कार्तिक
नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी
सरदार पटेल जन्म दिवस

शयो हत इव । अ० २०.१३१.१६
सोने वाला मरे हुए के समान है।

शनिवार १ नवम्बर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण १३ सौ० १६ कार्तिक शक १० कार्तिक
नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

रविवार २ नवम्बर, १९७५
चं० कार्तिक कृष्ण १४ सौ० १७ कार्तिक शक ११ कार्तिक
नक्षत्र चित्रा

सो ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु । यजु० ३२.८
वह परमात्मा अणु-अणु में ओत-प्रोत है ।

सोमवार ३ नवम्बर, १९७५
चं० कार्तिक अमावस्या   सौ० १८ कार्तिक   शक १२ कार्तिक
नक्षत्र स्वाती
दीपावली (दयानन्द निर्वाण दिवस)

मंगलवार ४ नवम्बर, १९७५
चं० कार्तिक शुक्ल १   सौ० १९ कार्तिक   शक १३ कार्तिक
नक्षत्र विशाखा
गोवर्द्धन

बुधवार ५ नवम्बर, १९७५

चं० कार्तिक शुक्ल २ सौ० २० कार्तिक शक १४ कार्तिक

नक्षत्र अनुराधा

बृहस्पतिवार ६ नवम्बर, १९७५

चं० कार्तिक शुक्ल ३ सौ० २१ कार्तिक शक १५ कार्तिक

नक्षत्र ज्येष्ठा

उदायुषा स्वायुषोदस्थाम् । यजु० ४ २८
हम उत्कृष्ट और शुभ जीवन के लिए उद्योगशील हों ।

शुक्रवार ७ नवम्बर, १९७५

चं० कार्तिक शुक्ल ४ सौ० २२ कार्तिक शक १६ कार्तिक

नक्षत्र मूल

शनिवार ८ नवम्बर, १९७५

चं० कार्तिक शुक्ल ५ सौ० २३ कार्तिक शक १७ कार्तिक

नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

कृधी न ऊर्ध्वान् चरथाय जीवसे । ऋ० १.३६.१४
प्रभो ! जीवन यात्रा में हमें समुन्नत कीजिए ।

रविवार ९ नवम्बर, १९७५

चं० कार्तिक शुक्ल ६ सौ० २४ कार्तिक शक १८ कार्तिक

नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

सोमवार १० नवम्बर, ९७५

चं० कार्तिक शुक्ल ७ सौ० २५ कार्तिक शक १९ कार्तिक

नक्षत्र श्रवण

दस्यूनव धनुष्व । अ० १६।४६।५
दस्युओं को धुन डाल ।

मंगलवार ११ नवम्बर, १६७५
चं० कार्तिक शुक्ल ८ सौ० २६ कार्तिक शक २० कार्तिक
नक्षत्र धनिष्ठा
गोपाष्टमी

बुधवार १२ नवम्बर, १६७५
चं० कार्तिक शुक्ल ६ सौ० २७ कार्तिक शक २१ कार्तिक
नक्षत्र शतभिषज्

मम पुत्राः शत्रुहणः । ऋ० १०.१५६.२
मेरे पुत्र शत्रु का हनन करने वाले हों।

बृहस्पतिवार १३ नवम्बर, १९७५
चं० कार्तिक शुक्ल १० सौ० २८ कार्तिक शक २२ कार्तिक
नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

शुक्रवार १४ नवम्बर, १९७५
चं० कार्तिक शुक्ल ११ सौ० २९ कार्तिक शक २३ कार्तिक
नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

बहु प्रजा निर्ऋतिमा विवेश । ऋ० १.१६४.३२
बहुत सन्तान वाला बहुत कष्ट उठाता है ।

शनिवार १५ नवम्बर, १९७५
चं० कार्तिक शुक्ल १२ सौ० ३० कार्तिक शक २४ कार्तिक
नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

महात्मा हंसराज पुण्यतिथि

रविवार १६ नवम्बर, १९७५
चं० कार्तिक शुक्ल १३ सौ० १ मार्गशीर्ष शक २५ कार्तिक
नक्षत्र रेवती

न स्रेधन्तं रयिर्नशत् । ऋ० ७.३२ २१
हिंसक को धन प्राप्त नहीं होता ।

सोमवार १७ नवम्बर, १९७५

चं० कार्तिक शुक्ल १४ | सौ० २ मार्गशीर्ष | शक २६ कार्तिक

नक्षत्र अश्विनी

लाला लाजपतराय पुण्यतिथि

मंगलवार १८ नवम्बर, १९७५

चं० कार्तिक पूर्णिमा | सौ० ३ मार्गशीर्ष | शक २७ कार्तिक

नक्षत्र भरणी

सदा गावः शुचयो विश्वधायसः । सा० ४४२
गौएँ सदा पवित्र और सबका कल्याण करती है ।

बुधवार १९ नवम्बर, १९७५
च० मार्गशीर्ष कृष्ण १ सौ० ४ मार्गशीर्ष शक २८ कार्तिक
नक्षत्र कृत्तिका

बृहस्पतिवार २० नवम्बर, १९७५
च० मार्गशीर्ष कृष्ण २ सौ० ५ मार्गशीर्ष शक २९ कार्तिक
नक्षत्र रोहिणी

भद्रादधि श्रेयः प्रेहि । अ० ७.८.१

तुम भद्र से भद्रतर जीवन को प्राप्त करो ।

शुक्रवार २१ नवम्बर, १९७५

चं० मार्गशीर्ष कृष्ण ३ सौ० ६ मार्गशीर्ष शक ३० कार्तिक

नक्षत्र मृगशीर्ष

शनिवार २२ नवम्बर, १९७५

चं० मार्गशीर्ष कृष्ण ४ सौ० ७ मार्गशीर्ष शक १ मार्गशीर्ष

नक्षत्र आर्द्रा

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम् । ऋ० १.२३.१९
जल में अमृत है औषधि है ।

रविवार २३ नवम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष कृष्ण ५ सौ० ८ मार्गशीर्ष शक २ मार्गशीर्ष
नक्षत्र पुनर्वसु

सोमवार २४ नवम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष कृष्ण ६ सौ० ९ मार्गशीर्ष शक ३ मार्गशीर्ष
नक्षत्र पुष्य:

असि दभ्रस्यचिद्वृधः । ऋ० १.८१.२
तू क्षुद्र को महान् बनाने वाला है ।

मंगलवार २५ नवम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष कृष्ण ७ सौ० १० मार्गशीर्ष शक ४ मार्गशीर्ष
नक्षत्र आश्लेषा

बुधवार २६ नवम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष कृष्ण ८ सौ० ११ मार्गशीर्ष शक ५ मार्गशीर्ष
नक्षत्र मघा

क्षुध्यद्भ्यो वय आसुति दाः । ऋ० १.१०४.७
भूखों को अन्न एवं जल दो ।

बृहस्पतिवार २७ नवम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष कृष्ण ९ सौ० १२ मार्गशीर्ष शक ६ मार्गशीर्ष
नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

शुक्रवार २८ नवम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष कृष्ण १० सौ० १३ मार्गशीर्ष शक ७ मार्गशीर्ष
नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

शनिवार २९ नवम्बर, १९७५

चं० मार्गशीर्ष कृष्ण ११ सौ० १४ मार्गशीर्ष शक ८ मार्गशीर्ष

नक्षत्र हस्त

रविवार ३० नवम्बर, १९७५

चं० मार्गशीर्ष कृष्ण १२ सौ० १५ मार्गशीर्ष शक ९ मार्गशीर्ष

नक्षत्र चित्रा

मित्रस्य यात्रां पथा । ऋ० ५.६४.३
हम मित्र के पथ पर चलें ।

सोमवार १ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष कृष्ण १३ सौ० १६ मार्गशीर्ष शक १० मार्गशीर्ष
नक्षत्र स्वाती

मंगलवार २ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष कृष्ण १४ सौ० १७ मार्गशीर्ष शक ११ मार्गशीर्ष
एवं अमावस्या नक्षत्र विशाखा

शन्नस्तपतु सूर्यः । ऋ० ८.१८.९
सूर्य हम सबके लिए सुखद होकर तपे ।

बुधवार ३ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल १ सौ० १८ मार्गशीर्ष शक १२ मार्गशीर्ष
नक्षत्र ज्येष्ठा

राजेन्द्र बाबू जयन्ती

बृहस्पतिवार ४ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल २ सौ० १९ मार्गशीर्ष शक १३ मार्गशीर्ष
नक्षत्र मूल

अकर्मा दस्युः । ऋ० १०.२२.८
कर्म न करने वाला ही दस्यु है ।

शुक्रवार ५ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल ३ सौ० २० मार्गशीर्ष शक १४ मार्गशीर्ष
नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा

शनिवार ६ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल ४ सौ० २१ मार्गशीर्ष शक १५ मार्गशीर्ष
नक्षत्र उत्तराषाढ़ा

स्वदन्ति गावः पयोभिः । ऋ० ९.६२.५
गौएँ अपने दूध से भोजन को मधुर बनाती हैं ।

रविवार ७ दिसम्बर, १९७५

चं० मार्गशीर्ष शुक्ल ५ सौ० २२ मार्गशीर्ष शक १६ मार्गशीर्ष

नक्षत्र श्रवण

सोमवार ८ दिसम्बर, १९७५

चं० मार्गशीर्ष शुक्ल ६ सौ० २३ मार्गशीर्ष शक १७ मार्गशीर्ष

नक्षत्र धनिष्ठा

सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत । ऋ० ६.८३.४
पुण्यकर्मा मधुरस—सुख का आस्वादन करते हैं।

मंगलवार ९ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल ७ सौ० २४ मार्गशीर्ष शक १८ मार्गशीर्ष
नक्षत्र धनिष्ठा

बुधवार १० दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल ७ सौ० २५ मार्गशीर्ष शक १९ मार्गशीर्ष
नक्षत्र शतभिषज्

क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते । ऋ० ९.८६.४३

सब लोग कर्मशील को ही चाहते हैं ।

बृहस्पतिवार ११ दिसम्बर, १९७५

चं० मार्गशीर्ष शुक्ल ८ सौ० २६ मार्गशीर्ष शक २० मार्गशीर्ष

नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा

शुक्रवार १२ दिसम्बर, १९७५

चं० मार्गशीर्ष शुक्ल ९ सौ० २७ मार्गशीर्ष शक २१ मार्गशीर्ष

नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा

शनिवार १३ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल १० सौ० २८ मार्गशीर्ष शक २२ मार्गशीर्ष
नक्षत्र रेवती

रविवार १४ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल ११ सौ० २९ मार्गशीर्ष शक २३ मार्गशीर्ष
नक्षत्र अश्विनी

सोमवार १५ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल १२ सौ० ३० मार्गशीर्ष शक २४ मार्गशीर्ष
नक्षत्र भरणी

सरदार पटेल पुण्यतिथि

मंगलवार १६ दिसम्बर, १९७५
चं० मार्गशीर्ष शुक्ल १३ सौ० १ पौष शक २५ मार्गशीर्ष
नक्षत्र कृत्तिका

बुधवार १७ दिसम्बर १९७५

चं० मार्गशीर्ष शुक्ल १४ सौ० २ पौष शक २६ मार्गशीर्ष

नक्षत्र रोहिणी

बृहस्पतिवार १८ दिसम्बर, १९७५

चं० मार्गशीर्ष पूर्णिमा सौ० ३ पौष शक २७ मार्गशीर्ष

नक्षत्र मृगशीर्ष

राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् । ऋ० १०.१३७.५
राष्ट्र को स्थिरता से धारण करो ।

शुक्रवार १९ दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण १ | सौ० ४ पौष | शक २८ मार्गशीर्ष

नक्षत्र आर्द्रा

शनिवार २० दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण २ | सौ० ५ पौष | शक २९ मार्गशीर्ष

नक्षत्र पुनर्वसु

दिवं ते धूमो गच्छतु । यजु० ६.२१
तेरा यश स्वर्गलोक तक पहुँच जाए ।

रविवार २१ दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण ३ सौ० ६ पौष शक ३० मार्गशीर्ष

नक्षत्र पुष्य

सोमवार २२ दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण ४ सौ० ७ पौष शक १ पौष

नक्षत्र आश्लेषा

यन्ति प्रमादमतन्द्राः । अथर्व० २०।१८।३
पुरुषार्थी परमानन्द को प्राप्त करते हैं ।

मंगलवार २३ दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण ५ | सौ० ८ पौष | शक २ पौष

नक्षत्र मघा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-दिवस

बुधवार २४ दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण ६ | सौ० ९ पौष | शक ३ पौष

नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी

पुनन्तु मा देवजनाः । यजु० १६.३६
देवजन मुझे पवित्र करें ।

बृहस्पतिवार २५ दिसम्बर, १६७५

चं० पौष कृष्ण ७-८ सौ० १० पौष शक ४ पौष

नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी

शुक्रवार २६ दिसम्बर, १६७५

चं० पौष कृष्ण ६ सौ० ११ पौष शक ५ पौष

नक्षत्र हस्त

यस्य छायामृतम् । यजु० २५ १३
उस प्रभु का आश्रय मोक्षसुखदायक है ।

शनिवार २७ दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण १० सौ० १२ पौष शक ६ पौष

नक्षत्र चित्रा

रविवार २८ दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण ११ सौ० १३ पौष शक ७ पौष

नक्षत्र स्वाती

अप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम । अ० २.११.१
अपने बराबर वालों से आगे बढ़ और कल्याण प्राप्त कर।

सोमवार २९ दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण १२ सौ० १४ पौष शक ८ पौष

नक्षत्र विशाखा

मंगलवार ३० दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण १३ सौ० १५ पौष शक ९ पौष

नक्षत्र अनुराधा

यदन्तरं तद्बाह्यम् । अ० २.३०.४
जो तुम्हारे अन्दर है, वही बाहर हो ।

बुधवार ३१ दिसम्बर, १९७५

चं० पौष कृष्ण १४ सौ० १६ पौष शक १० पौष

नक्षत्र ज्येष्ठा

दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित

वैदिक हिन्दी साहित्य

१—**वैदिक सत्संग पद्धति** (हिन्दी) नया संस्करण
मूल्य ६० पैसे ५०) सैकड़ा

२—**गीत मंजरी**—नया तीसरा बड़ा संस्करण मूल्य २)

३—**वैदिक सिद्धान्त**—पं० यश:पाल सिद्धान्तालंकार मूल्य ३)

४—**आर्यसमाज के नियम**—पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या
मूल्य १) ४०

५—**वैदिक विचारधारा** मूल्य २५ पैसे

६—**सत्यार्थप्रकाश**—प्रचार संस्करण मूल्य ५) ४००) सैकड़ा।
राज संस्करण सजिल्द मूल्य ६) : ५००) सैकड़ा

७—**सत्यार्थप्रकाश**—उपहार संस्करण, कपड़े की जिल्द-
मूल्य ८)। ६००) सैकड़ा

८—**स्वामी श्रद्धानन्द**—जीवन चरित्र मूल्य १)

९—**स्वामी दयानन्द**—जीवन चरित्र कपड़े की जिल्द ६)

सिद्धान्त : श्रद्धांजलियाँ। दर्जनों चित्र। ४ रंगों में छपा आवरण।
अजिल्द मूल्य १) ६० पैसे। १२०) सैकड़ा

१०—**विश्व को आर्यसमाज का सन्देश**—भारतेन्द्रनाथ ३० पैसे,
२५) सैकड़ा

११—**वैदिक अर्थनीति**—श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
मूल्य ४० पैसे

१२—**बृहस्पति राजधर्मसूत्र**—पं० शिवदयालु मूल्य १)

१३—**योगेश्वर श्रीकृष्ण** मूल्य ६० पैसे

१४—**वैदिक अर्थ शास्त्र परिचय**—भारतेन्द्रनाथ मूल्य १)

१५—**शतपथ ब्राह्मण (प्रथम कांड)** स्वर्गीय स्वामी समर्पणानन्द जी १५)

१६—**यजुर्वेद-सामवेद भाष्य** लागत मूल्य ५१)

१७—**ऋग्वेद (६ मण्डल)** महर्षि दयानन्द कृत भाष्य
लागत मूल्य ५१)

१८—**यजुर्वेद भाष्य** गत्ते की जिल्द १६)
कपड़े की सुनहरी जिल्द २०)

१९—**वेदों का यथार्थ स्वरूप**—पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
सजिल्द मूल्य १०)

२०—**संक्षिप्त महाभारत** मूल्य ८)

२१—**ज्योति-स्तम्भ**—दीनानाथ सिद्धांतालंकार मूल्य ५)

२२—**बोध-रात्रि (महाकाव्य)** मूल्य ५)

२३—**आर्य क्रांतिकारी** मूल्य ३)

२४—**अथर्ववेद परिचय**—पं० विश्वनाथ जी मूल्य ५)

२५—**अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र**—विद्यामार्तण्ड स्वा० ब्रह्ममुनिजी
मूल्य १०)

२६—**१८५७ के भूले बिसरे शहीद (सजिल्द)** मूल्य १) ५० पैसे

अँग्रेजी साहित्य

27. Light of Truth. **अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश**—Rs. 15.00
28. An Introduction to the Commentary on the Vedas. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का पं० घासीरामकृत अंग्रेजी अनुवाद मूल्य ८) सजिल्द, कपड़े की जिल्द १०)
29. Teachings of Swami Dayananda. Rs. 1.40
30. Ten Commandments—Pt. Chamupati Rs. 1.40 आर्यसमाज के १० नियमों की अभूतपूर्व [व्याख्या :
31. Message of the Arya Samaj to the Universe Rs. 00.50
32. Vedic-Prayer— Rs. 4.00
33. Dayananda the Great (तीसरा नया संस्करण) Re. 00.20
34. **An Introduction to the Arya Samaj** Re. 00.20 (चतुर्थ संस्करण) आर्यसमाज से सभी को परिचित करने के लिए प्रभावशाली ट्रैक्ट।
35. The Great Gayatri Re. 00.25
36. The Vedic Fundamentals Rs. 4 00
37. Vedic-Life Rs. 3.00
38. What is Yoga ? योग के सम्बन्ध में मार्गदर्शन— मूल्य २० पैसे
39. The man and His Religion Rs. 1.40 स्वामी सत्यप्रकाश जी लिखित एक ऐसा ग्रंथ जो अपूर्व है—

40. Life of Swami Dayananda—D.N. Vasudeva Rs. 2.00

41. Christianity and the Veads Rs. 2.50

पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड लिखित

42. Essence of the Vedic Religion Re. 00.20

43. The Fundamentals of the Arya Samaj Re. 00.20

44. The Yoga of Patanjali Re. 1.00

45. Ramayana (Abridged) H.N. Kapur Rs. 3.00

46. Krishnayana—H.N. Kapur Re. 1.00

47. Agnihotra—Swami (Dr.) Satya Prakash Saraswati Rs. 10.00

४८. Whose Wealth ?—Mahatma Ananda Swami Rs. 10.00

१५) सैकड़ा के उपयोगी प्रचार ट्रैक्ट

४९— आर्यसमाज क्या मानता है ? — मदनमोहन विद्यासागर

५०—विश्व को वेद का सन्देश — भारतेन्द्र नाथ

५१—महर्षि दयानन्द की विशेषतायें — महात्मा नारायण स्वामी

५२—आर्यसमाज की विचारधारा — गंगाप्रसाद उपाध्याय

५३—आर्यसमाज की मान्यताएं — पं० रामचन्द्र देहलवी

५४— निमन्त्रण आर्यसमाज का — पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

५४—आर्यसमाज के १०० वर्ष — भारतेन्द्रनाथ

५५—आर्य कौन ? — पं० हरिशरण

५६—मूर्ति पूजा की हानियाँ — महर्षि दयानन्द सरस्वती

५७—सुख का मार्ग — भारतेन्द्र नाथ
५८ अंडा मनुष्य का भोजन नहीं ! — आचार्य जगदीश विद्यार्थी
५९—साम्यवाद : समाजवाद क्यों नहीं — महात्मा नारायण स्वामी

अत्यन्त-उपयोगी साहित्य

६०...क्या वेद में मांस भक्षण का विधान है ? — १)
६१...ऋषि दयानन्द ने कहा था......... — ५० पैसे
६२=वेद और बाइबिल — १)

ईसाईयत सम्बन्धी साहित्य

६३...पोप की सेना का भारत पर हमला — १५) सैकड़ा
६४...बाइबिल को चुनौती — २०) "
65—Challenge to the Christian Faith — 5) "
66—Bible in the Balance-Charles Smith २५ पैसे, २०) "

आध्यात्मिक साहित्य

६७—**गायत्री शतक**—१००गायत्री मन्त्रों की प्रभावपूर्ण आध्यात्मिक व्याख्या २)
६८—**उपनिषद्—वचनामृत। पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार** मूल्य १)

६९—**ईश्वर भक्ति**—स्वामी सर्वदानन्द जी की अनमोल रचना।
—मूल्य १)४०

जिसे पढ़कर प्रभु के चरणों में मस्तक झुक जाता है। प्रभु से मिलने का मार्ग दर्शन।

७०—**मोक्ष का वैदिक मार्ग**—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री व योगी राज पथिक का मोक्ष के सम्बन्ध में अनुपम मार्ग दर्शन। मूल्य १)

७१—**ईशोपनिषद्** मूल्य १)

७२—**शतक-त्रयी**—वेद के ३००आध्यात्मिक मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह
मूल्य १)४०

७३—**प्रार्थना सुमन**-- मूल्य १)

७४—**मां गायत्री**— तीसरा संस्करण—मूल्य १) ४०

७५—**उपनिषद् कथामाला**—महात्मा नारायण स्वामी मूल्य १)

७६—**धर्म का मार्ग**—पं० सुरेशचन्द्र विद्यालंकार— मूल्य १)

७७—**उपनिषद् त्रयी**—पं० शिवदयालु कृत—यजुर्वेद के तीन अध्यायों की हिन्दी व अंग्रेजी में प्रेरक आध्यात्मिक व्याख्या।
मूल्य १)

७८—**अमृत-पथ**—जीवन को सुन्दर आनन्दमय बनाने का मार्ग दर्शन। ग्रंथ को बार-बार पढ़ने पर भी मन नहीं भरता--
दीनानाथ सिद्धांतालंकार सजिल्द—५)

७९—नारायण अध्यात्म सुधा—महात्मा नारायण स्वामी : १)

८०—**अध्यात्म योग**—पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार मूल्य ६)

८१—**कल्याण मार्ग**—जगन्नाथ पथिक मूल्य ३० पैसे

८२—**योग की राह पर**—जगन्नाथ पथिक मूल्य ३० पैसे

८३— वैदिक **ज्ञान**-सुधा मूल्य १)

८४—वैदिक अध्यात्म ज्योति—स्व० 'शान्त' स्वा० अनुभवानन्द सरस्वती ४)

प्रभु भक्ति के चुने हुए ४०० वेद मन्त्रों का संग्रह

शताब्दी समारोह के लिए : मँगाएँ

१—सत्यार्थप्रकाश प्रचार संस्करण ४००) सैकड़ा
२— ,, ,, राज संस्करण ५००) सैकड़ा
३— ,, ,, उपहार संस्करण ६००) सैकड़ा
४—ऋषि दयानन्द जीवन-चरित्र १२०) सैकड़ा
५—आर्यसमाज के १०० वर्ष १५) सैकड़ा
६—आर्यसमाज के नियम का पोस्टर पत्ती लगा५०) सैकड़ा
७—स्वामी जी के चित्र का पोस्टर पत्ती लगा ५०) सैकड़ा
८—गायत्री मंत्र का पोस्टर पत्ती लगा ५०) सैकड़ा
९—१९७५ का कलैंडर ६५) सैकड़ा

जन ज्ञान प्रकाशन नई दिल्ली—५

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी रचनात्मक रूप से मनाने के लिए अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक

प्रचार-पोस्टर लगवाइए

अभी चार पोस्टर तैयार हैं। २०×३० इंच साइज में

१. सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में ३५) सैकड़ा, पत्ती लगा ५०) सै०
२. आर्यसमाज के १० नियमों का तिरंगा— ,, ,, ५०) सै०
३. स्वामीजी के चित्र वाला (चार रंगों में) ,, ,, ५०) सै०
४. गायत्री मंत्र अर्थ सहित सादा ३५) सै०
   (३ रंगों में) पत्ती लगा आर्ट पेपर पर ५०) सै० [illegible]×२० साइज में
५. स्वामीजी व १० नेताओं का चित्र पत्ती लगा ५०) सैकड़ा
   बढ़िया १००) सैकड़ा
६. स्वामीजी का असली चित्र ,, ३०) ,,
७. स्वामीजी के दो चित्र छोटे ,, १००) ,,
८. १९७५ का कलैण्डर [illegible]५) ,,
९. स्वामीजी का बड़ा चित्र ,, [illegible]०) ,,
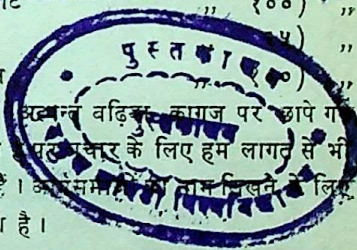
पोस्टर बड़े साइज में अत्यन्त बढ़िया कागज पर छापे गये हैं। व्यय बहुत पड़ता है पर प्रचार के लिए हम लागत से भी कम मूल्य पर दे रहे हैं। आर्यसमाजों के नाम लिखने के लिए भी स्थान छोड़ा गया है।

१. कृपया आदेश के साथ चौथाई धन भेजें
२. अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखें

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली-५

वेद "सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

— महर्षि दयानन्द